

## लपाईगुड़ी के पास बीकानेर एक्सप्रेस की

## 12 बोगियां बेपटरी, 3 लोगों की मौत की पुष्टि

सैकड़ों लोगों के हताहत होने की आशंका



## पीएम मोदी ने की ममता से बात

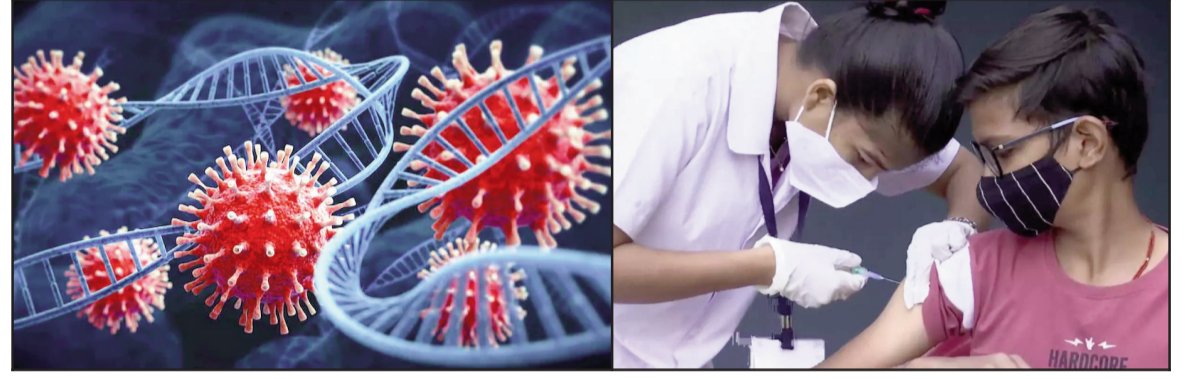
कोलकाता (एजेंसी)।

उत्तर बंगाल के जलपाईगुड़ी के मयनागुड़ी में गुरुवार की शाम पांच बजे बीकानेर एक्सप्रेस की 12 बोगियां बेपटरी हो गईं। ट्रेन दुर्घटना में सैकड़ों लोगों के हताहत होने की आशंका जाहिर की जा रही है। फिलहाल, जलपाईगुड़ी के डीएम ने तीन लोगों की मौत की पुष्टि की है। डीएम ने कहा कि करीब 50 एंबुलेंस मौके पर हैं और यात्रियों को निकालकर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने का प्रयास जारी है। आसपास के सभी सरकारी व निजी अस्पतालों को अलर्ट कर दिया गया है। बताया जा रहा है, कि दुर्घटना के

समय ट्रेन की गति 40 किलोमीटर प्रति घंटा थी। ट्रेन बीकानेर से गुवाहाटी जा रही थी। यह घटना पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे के क्षेत्र में हुई है। हादसे में कई बोगियां एक दूसरे से टकराने के साथ एक दूसरे के ऊपर भी चढ़ गई हैं। साथ ही, कई बोगी पलट गई हैं। अभी रेलवे व जिला प्रशासन के सामने सबसे बड़ी चुनौती तीन बोगियों में फंसे हुए यात्रियों को सुरक्षित निकालना है। इधर, घटना के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से बातचीत कर घटना की जानकारी ली है। वहीं, मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को घायल यात्रियों को जल्द से जल्द समुचित उपचार

मुहैया कराने का निर्देश दिया है। रेलवे सहित जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी घटनास्थल पर पहुंच रहे हैं। वहीं, अंधेरा व घने कोहरे की वजह से राहत व बचाव कार्य में और मुश्किल आ रही है। रिपोर्ट के मुताबिक, गुवाहाटी-बीकानेर एक्सप्रेस 15633 (यूपी) शाम करीब पांच बजे पटरी से उतर गई। इस दुर्घटना में 12 कोच प्रभावित हुए हैं। डीआरएम और एडीआरएम दुर्घटना राहत ट्रेन और मेडिकल वैन के साथ घटनास्थल पर पहुंच गए हैं। यात्री ने बताया कि अचानक से झटका लगा और ट्रेन की बोगी पलट गई। ट्रेन के दो-चार डिब्बे पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हुए हैं।

## हमें भविष्य में भी वायरस के किसी भी वैरिएंट से निपटने तैयार रहना



## जिला स्तर पर पर्याप्त सुविधाएं जुटाए और किशोरों के टीकाकरण में तेजी लाए: पीएम

नई दिल्ली (एजेंसी)।

देश में कोरोना की तीसरी लहर से निपटने की रणनीति बनाने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को मुख्यमंत्रियों के साथ बैठक की। बैठक में केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह भी मौजूद रहे। बैठक में प्रधानमंत्री ने राज्यों में स्वास्थ्य ढांचे की तैयारियों का जायजा लेकर कई अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा हुई। इसके पहले उच्चस्तरीय बैठक में पीएम ने जिला स्तर पर पर्याप्त सुविधाएं जुटाने और किशोरों के टीकाकरण में तेजी लाने का आह्वान किया था। कोरोना स्थिति पर राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ बैठक के दौरान पीएम मोदी ने कहा कि पिछले वैरिएंट की तुलना में ओमिक्रोन तेजी से फैल रहा है। हमारे स्वास्थ्य विशेषज्ञ स्थितियों का आकलन कर रहे हैं। स्पष्ट है कि हमें सतर्क रहना है। बैठक में पीएम मोदी ने कहा कि, हम भारत के 130 करोड़ लोग, अपने सामूहिक प्रयासों से निश्चित रूप से कोरोना महामारी से विजयी होने वाले हैं। रही बात ओमिक्रोन की तब इसके बारे में प्रारंभिक तस्वीर धीरे-धीरे साफ हो रही है। यह वैरिएंट सामान्य आबादी को पिछले वाले वैरिएंट की तुलना में कई गुना तेजी से संक्रमित कर रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, आज राज्यों के पास पर्याप्त मात्रा में वैक्सिन है। फटलाइन वर्कर्स

### केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री की अपील, सभी पात्र किशोर मित्र जल्द से जल्द टीका लगावाए

नई दिल्ली। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया ने कहा कि भारत में 15 से 18 वर्ष के आयु वर्ग के किशोरों के लिए 3 जनवरी को टीकाकरण शुरू होने के बाद से श्रेणी के तीन करोड़ से अधिक लाभार्थियों को कोविड-19 रोधी टीके की पहली खुराक लग चुकी है। मंत्री ने कहा, 'युवा भारत के बीच जिम्मेदारी और उत्साह की महान भावना मांडविया ने टीका किया, 15-18 वर्ष के आयु वर्ग के तीन करोड़ से अधिक किशोरों को कोविड-19 रोधी टीके की पहली खुराक मिली है। मैं अपने सभी पात्र किशोर मित्रों से जल्द से जल्द टीका लगवाने की अपील करता हूँ।' केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, टीके की 26,73,385 से अधिक एहतियाती खुराक स्वास्थ्य कर्मियों, अग्रिम मोर्चे के कर्मियों और 60 वर्ष तथा उससे अधिक उम्र के लोगों को दी गई है। सुबह सात बजे तक की रिपोर्ट के अनुसार, पिछले 24 घंटों में 76 लाख से अधिक खुराक (76.32.024) देने के साथ कोविड-19 टीकाकरण दायरा बढ़कर 154.61 करोड़ से अधिक हो गया है।

और वरिष्ठ नागरिकों को 'प्रोकाशन डोज' जितनी जल्द लगेगी उतनी ही हमारे हेल्थ केयर सिस्टम का सामर्थ्य बढ़ेगा। शत-प्रतिशत टीकाकरण के लिए हर घर दस्तक अभियान को हमें और तेज करना है। मुख्यमंत्रियों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, आज भारत लगभग 92 प्रतिशत वयस्क जनसंख्या को कोविड वैक्सिन की पहली डोज दे चुका है। देश दूसरी डोज की कवरेज में भी 70 प्रतिशत के आसपास पहुंच चुका है। 10 दिन के अंदर ही भारत ने लगभग तीन करोड़ किशोरों का भी टीकाकरण किया है। पीएम ने

कहा कि, हमें सतर्क और सावधान रहना चाहिए लेकिन पैनिक से बचना चाहिए। खासकर त्यौहारों के मौसम में लोगों और प्रशासन की सतर्कता कम नहीं होनी चाहिए। मौजूदा वक में ओमिक्रोन से लड़ने के अलावा हमें भविष्य में भी वायरस के किसी भी वैरिएंट के लिए तैयार रहने की जरूरत है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उच्च आधिकारिकों के साथ पिछली बैठक में कोरोना की तीसरी लहर से निपटने को लेकर की गई तैयारियों की समीक्षा की थी। साथ ही जिला स्तर पर स्वास्थ्य ढांचे को तैयार करने का निर्देश दिया था।

## भारत के प्रधान न्यायधीश एनवी रमण ने तिरुपति मंदिर में की पूजा-अर्चना

तिरुपति, आंध्रप्रदेश (एजेंसी)।

भारत के प्रधान न्यायधीश (सीजेआई) न्यायमूर्ति एनवी रमण ने गुरुवार को वैकुंठ एकादशी के मौके पर तिरुमला के निकट स्थित भगवान वेङ्कटेश्वर के मंदिर में पूजा अर्चना की। मंदिर के एक अधिकारी ने इसकी जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि भगवान वेङ्कटेश्वर की पूजा करने के बाद, न्यायमूर्ति रमण पारंपरिक रूप से पवित्र मार्ग से परिक्रमा की, जिसे वैकुंठ द्वारम कहा जाता है। यह मार्ग मंदिर के आंतरिक गर्भगृह के चारों ओर है, जो वर्ष में केवल एक बार वैकुंठ एकादशी के दिन खोला जाता है। अधिकारी ने बताया कि न्यायमूर्ति रमण बुधवार रात यहां पूजा अर्चना करने पहुंचे।

उन्होंने बताया कि न्यायमूर्ति रमण यहां पहाड़ी पर स्थित अत्यधिक सुरक्षा वाले टीटीडी अतिथिगृह में कल रात रुके थे और आज सुबह उन्होंने मंदिर में पूजा-अर्चना की। अधिकारी ने बताया कि यहां से रवाना होने से पहले न्यायमूर्ति रमण ने मंदिर परिसर के बाहर निकाले गए भगवान वेङ्कटेश्वर के स्वर्ण रथ जुलूस में भी हिस्सा लिया।

उन्होंने बताया कि बाद में न्यायमूर्ति रमण ने तिरुचानूर में देवी पद्मावती के मंदिर में भी पूजा अर्चना की। अधिकारी ने कहा कि मंदिर पहुंचने पर टीटीडी बोर्ड के अध्यक्ष वार्डवी सुब्बा रेड्डी, कार्यकारी अधिकारी केएस जवाहर रेड्डी और अन्य ने रमण का गर्मजोशी से स्वागत किया।

## जैविक खेती के कार्यक्रम में शिरकत करने दो दिवसीय गुजरात दौरा पर पहुंचे अमित शाह

अहमदाबाद (एजेंसी)।

केन्द्र सरकार में केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह दो दिन के दौरे पर गुरुवार को अपने गृह राज्य गुजरात पहुंचे। इस दौरान वह शनिवार को जैविक खेती से संबंधित एक योजना की शुरुआत भी करेंगे। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की प्रदेश



मोडिया संयोजक यमनेश देवे ने बताया कि शाह शिरकत करते हैं लेकिन इस बार वह शुक्रवार

गुरुवार रात को अहमदाबाद पहुंच सकते हैं। उन्होंने बताया कि उनके इस दौरे के दौरान किसी प्रकार की कोई जनसभा नहीं होगी। उन्होंने बताया कि उत्तरायण के मौके पर शाह वैसे तो प्रत्येक वर्ष 14 जनवरी को अपने परिवार के सदस्यों और पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ पतंग उड़ते हैं और अन्य कार्यक्रमों में शिरकत करते हैं लेकिन इस बार वह शुक्रवार

को इन कार्यक्रमों से दूर रहेंगे क्योंकि उनके एक निकट संबंधी की मृत्यु हुई है। उन्होंने कहा, 'शाह मुख्य रूप से शहर स्थित अपने आवास पर ही रहेंगे। 15 जनवरी को वह जैविक खेती से संबंधित एक कार्यक्रम में शिरकत करेंगे। यह कार्यक्रम मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल के आधिकारिक आवास पर निर्धारित है।' गांधीनगर से सांसद शाह अपने संसदीय क्षेत्र से संबंधित विकास परियोजनाओं और अन्य सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा कर सकते हैं।

### संसद भवन कोरोना की चपेट में, 718 कर्मचारी कोरोना संक्रमित हुए

नई दिल्ली। देशभर में कोरोना अपना कहर दिखा रहा है। पिछले 24 घंटे में देश में दो लाख से ज्यादा कोरोना मामले आए हैं। वहीं संसद भवन भी कोरोना की चपेट में आ चुका है। बजट सत्र शुरू होने में ज्यादा दिन नहीं बचे हैं, लेकिन संसद भवन के सैकड़ों कर्मचारी कोरोना की चपेट में आ चुके हैं। सूत्रों के मुताबिक कोरोना की तीसरी लहर के दौरान पिछले एक महीने में संसद भवन के 718 कर्मचारी कोरोना संक्रमित हो चुके हैं। इनमें से ज्यादातर पिछले दो सप्ताहों के दौरान संक्रमित हुए हैं। 9 जनवरी तक करीब 400 कर्मचारी कोरोना संक्रमित थे, लेकिन बुधवार को यह आंकड़ा 700 पार कर गया है। पिछले तीन दिनों में ही करीब 43 फीसदी की वृद्धि इन आंकड़ों में हुई है। राज्यसभा सचिवालय के सूत्रों ने बताया कि संक्रमितों में से करीब 200 कर्मचारी राजसभा के हैं। बाकी लोकसभा एवं अन्य विभागों से जुड़े हैं। लोकसभा और राज्यसभा ने अपने एक तिहाई कार्मिकों को घर से काम करने की अनुमति दी है। जबकि 50 फीसदी अधिकारियों को घर से काम करने की अनुमति है। बता दें कि 1 फरवरी को आम बजट पेश होता है।

इकाई के साथ पतंग उड़ते हैं और अन्य कार्यक्रमों में शिरकत करते हैं लेकिन इस बार वह शुक्रवार

## हम उत्तर प्रदेश में नकारात्मक नहीं, सकारात्मक राजनीति करेंगे: प्रियंका गांधी



नई दिल्ली (एजेंसी)।

कांग्रेसनेत्री और पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी वाड़ा ने गुरुवार को उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव में कांग्रेस द्वारा नकारात्मक नहीं, बल्कि सकारात्मक चुनाव प्रचार

करने की वकालत की है। उन्होंने कहा ऐसा करके राज्य के भविष्य को संवारा जा सकता है। उन्होंने विधानसभा चुनाव के लिए 125 उम्मीदवारों की पहली सूची जारी करते हुए यह भी कहा कि इस चुनाव के बाद भी वह उत्तर प्रदेश

चुनाव '80 फीसदी बनाम 20 फीसदी' होगा। दूसरी तरफ, समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव भी 'सामाजिक न्याय' के मुद्दे को अपने चुनाव प्रचार के केंद्रबिंदु में रखते नजर आ रहे हैं। प्रियंका ने मुख्यमंत्री का नाम लिए बगैर उन पर निशाना साधते हुए सवाल किया, 'बेरोजगार नौजवानों का प्रतिशत क्यों नहीं गिना जा रहा है? क्या वे महत्वपूर्ण नहीं हैं? जिन महिलाओं पर अत्याचार हो रहा है, उनके बारे में क्यों नहीं सोचा जा रहा है?' एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा, 'इस चुनाव के बाद भी उत्तर प्रदेश में रहूंगी, काम करती रहूंगी। मेरा प्रयास है कि उत्तर प्रदेश में मैं अपनी पार्टी को मजबूत करके आगे बढ़ाऊं... अगर पार्टी कहेगी

कि हमारी भूमिका कहीं और भी होनी चाहिए तो वह भी करूंगी।' नेताओं के पार्टी छोड़ने के सवाल पर उन्होंने कहा, 'मैंने पहले भी कहा कि हमारा संघर्ष ऐसा है जिसके लिए हिम्मत की जरूरत है। हमारे साथी जाते हैं तो दुख होता है। प्रयास होता है कि वे साथ रहें। लेकिन वह जाने का निर्णय लेते हैं तो लगता है कि वह हिम्मत नहीं रख पा रहे हैं।' महिलाओं को बड़ी संख्या में टिकट देने के सवाल पर उन्होंने कहा, 'हमने महिलाओं की बात शुरू की तो सभी पार्टियां घोषणाएं करने लगीं। भाजपा, सपा, रालोद, बसपा सबने घोषणाएं कीं। हमारी सफलता यही है कि अब महिलाओं को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता।

हमारी भूमिका कहीं और भी होनी चाहिए तो वह भी करूंगी।' नेताओं के पार्टी छोड़ने के सवाल पर उन्होंने कहा, 'मैंने पहले भी कहा कि हमारा संघर्ष ऐसा है जिसके लिए हिम्मत की जरूरत है। हमारे साथी जाते हैं तो दुख होता है। प्रयास होता है कि वे साथ रहें। लेकिन वह जाने का निर्णय लेते हैं तो लगता है कि वह हिम्मत नहीं रख पा रहे हैं।' महिलाओं को बड़ी संख्या में टिकट देने के सवाल पर उन्होंने कहा, 'हमने महिलाओं की बात शुरू की तो सभी पार्टियां घोषणाएं करने लगीं। भाजपा, सपा, रालोद, बसपा सबने घोषणाएं कीं। हमारी सफलता यही है कि अब महिलाओं को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता।

## मुंबई में ऑक्सिजन बेड पर 96 फीसदी वे मरीज जिन्होंने कोरोना वैक्सिन की एक भी डोज नहीं ली

मुंबई (एजेंसी)।

कोरोना की तीसरी लहर में मुंबई से ऐसी खबर आ रही है, इस सभी को जानना जरूरी है। दरअसल मुंबई की बृहन्मुंबई नगर निगम (बीएमसी) के आयुक्त इकबाल चहल ने बताया है, कि मुंबई में ऑक्सिजन बेड पर 96 फीसदी वे मरीज हैं, जिन्होंने एक भी वैक्सिन का डोज नहीं लिया है। आयुक्त चहल ने बताया कि मुंबई के 186 अस्पतालों के ऑक्सिजन बेड पर जो मरीज भर्ती हैं, उसमें से 96 फीसदी मरीजों ने वैक्सिन का एक डोज भी नहीं लिया है, वहीं जिन्होंने वैक्सिन लगा रखी है, उन्हें संक्रमण हो रहा है, लेकिन वहां गंभीर स्थिति में जाने से बचे हैं। उन्होंने कहा कि लोगों को ओमिक्रोन को सामान्य फ्लू मानकर नहीं चलना चाहिए और वैक्सिन लगवाने पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि वैक्सिन ही है, जो गंभीर स्थिति में जाने से रोक सकती है। बीएमसी के मुताबिक अब तक मुंबई में करीब 1 करोड़ लोगों को दोनों डोज, वहीं 90 लाख लोगों को एक डोज लग चुका है। वहीं बीएमसी आयुक्त का कहना है कि अगर अस्पतालों में मरीजों की संख्या बढ़ती है, या ऑक्सिजन की मांग बढ़ती है, तब ऐसी स्थिति में पाबंदियां बढ़ेंगी। चहल ने कहा कि अच्छी बात यह है, कि कोविड संबंधित मौतों का आंकड़ा नियंत्रण में है, पिछले 16 दिनों में 19 मौतें की गई हैं। इसके अलावा ऑक्सिजन की मांग मुंबई में वर्तमान में 1 लाख सक्रिय मामले हैं, लेकिन 10 टन ऑक्सिजन इस्तेमाल हो रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के प्रमुख ने चेतावनी जारी करते हुए कहा कि ओमिक्रोन डेल्टा वैरिएंट की तरह भले ही घातक नहीं लग रहा है, लेकिन जिन्होंने अब तक वैक्सिन नहीं लगावाई है, उनके लिए यह जानलेवा साबित होगा है।



## संपादकीय

## नफरत के खिलाफ

सांप्रदायिकता पर लगाम लगाने की हर कोशिश स्वागतयोग्य है। विगत दिनों कथित धर्मसंघ से जो उद्गार निकले थे, उनकी गूंज एक याचिका के माध्यम से देश के सर्वोच्च न्यायालय तक पहुंची है और न्यायालय ने केंद्र व उत्तराखंड सरकार से जवाब मांगा है। याचिका में न्यायालय से मांग की गई है कि हरिद्वार और राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में हाल में आयोजित कार्यक्रमों में कथित रूप से नफरत फैलाने वाले भाषण देने वालों के खिलाफ जांच व यथोचित कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। याचिकाकर्ता पत्रकार कुर्बान अली और पटना उच्च न्यायालय की पूर्व न्यायाधीश व वरिष्ठ अधिवक्ता अंजना प्रकाश की प्रशंसा करनी चाहिए कि उन्होंने इस महत्वपूर्ण विषय को सर्वोच्च न्यायालय के सामने उठाया है। देश में एक बड़े धर्म में यह शिकायत है कि घृणा या हिंसा के ऐसे उद्गारों के बावजूद कानून-व्यवस्था ने अपना काम नहीं किया है। हालांकि, महात्मा गांधी को अपशब्द बोलने वाले एक धर्माचार्य को छत्तीसगढ़ की पुलिस ने मध्य प्रदेश से गिरफ्तार किया है और करीब आधा दर्जन थानों में रिपोर्ट दर्ज हुई है। अब सर्वोच्च न्यायालय के हस्तक्षेप के बाद कार्रवाई में तेजी आने की संभावना है। विशेष रूप से उत्तराखंड और केंद्र सरकार को जांच व कार्रवाई की सूचना न्यायालय को देनी पड़ेगी। मामले में अगली सुनवाई 10 दिन बाद होगी और इस सुनवाई का व्यापक असर होगा। इसमें कोई शक नहीं कि देश में नफरत फैलाने वाले भाषणों को रोकना हर हाल में जरूरी है। यह काम स्थानीय पुलिस को पहले ही कर लेना चाहिए था, पर टोंस कार्रवाई छत्तीसगढ़ की सरकार ने की और वह भी मध्य प्रदेश की सीमा में घुसकर। मतलब साफ है कि हम नफरत फैलाने वाले भाषणों को भी राजनीतिक नजरिये से देख रहे हैं। क्या उत्तराखंड या मध्य प्रदेश ने कार्रवाई इसलिए नहीं की, क्योंकि वहां भाजपा की सत्ता है? क्या छत्तीसगढ़ की सरकार इसलिए कार्रवाई कर पाई, क्योंकि वहां कांग्रेस सत्ता में है? सरकारें अपनी सुविधा या राजनीति के आधार पर चलाई जा रही हैं या कानून-संविधान के आधार पर? कोई आश्चर्य नहीं, अगर याचिकाकर्ता नफरत फैलाने वाले भाषण मामले में विशेष जांच दल की मांग कर रहे हैं? स्वतंत्र और निष्पक्ष जांच की मांग हो रही है। याचिका में खासतौर पर 17 व 19 दिसंबर, 2021 को हरिद्वार और दिल्ली में नफरत पैदा करने वाले भाषणों का उल्लेख किया गया है। मामला बहुत गंभीर है, क्या किसी समुदाय के नरसंहार का आह्वान किया गया? क्या ऐसी हिंसा की पैरवी कोई धर्म करता है? यदि कोई धर्म हिंसा की पैरवी करता है, तो फिर भारत में उसकी जगह कहाँ होनी चाहिए? समग्रता में यह जरूरी है कि ऐसे अनुशासनहीन आयोजनों को रोकना चाहिए। हिंसा के पक्ष में न कोई प्रवचन हो और न तकरारी। कौन धर्म है, जो गैर-धर्म वालों से घृणा सिखाता है? सांप्रदायिक नफरत की बुनियाद पर बने देशों का हस्तक्षेप हम नहीं देख पा रहे हैं? क्या कुछ लोग उस सहिष्णु, उदार, समझदार भारत को खत्म करना चाहते हैं, जिस पर दुनिया गर्व करती है। भारत में हो रही ऐसी कोशिशों पर प्रतिक्रिया पूरी दुनिया में हो रही है, भारत को चाहने वाले आज घिंति हैं। न्यायालयों, सरकारों व धर्म समाजों को सुनिश्चित करना चाहिए कि भारत में जैसे सदियों से तमाम धर्म शांतिपूर्वक रहते आए हैं, वैसे ही सदा रहें।

## कितने चुनौतीपूर्ण होंगे कोरोना काल में चुनाव

- आर.के. सिन्हा

कोरोना काल के बाद पहले चुनाव तो बिहार विधानसभा के लिये नवंबर-दिसंबर 2020 में ही हुए थे। उन चुनावों को आयोजित करने के बाद चुनाव आयोग ने अपनी पीठ भी थपथपाई थी। उसके बाद देश ने पश्चिम बंगाल विधानसभा के चुनाव भी देख लिए। वहां आठ चरणों में हुए चुनाव मार्च-अप्रैल 2021 में हुए थे। तब कोरोना की दूसरी लहर से देश जुड़ रहा था। अब चुनाव आयोग ने पांच राज्यों गोवा, उत्तर प्रदेश, पंजाब, मणिपुर और उत्तराखंड विधान सभा चुनावों के कार्यक्रम की घोषणा भी कर दी है। इन चुनावों के बाद देश को 690 नए विधायक और लगभग बीस नए राज्य सभा सदस्य मिलेंगे। इन विधानसभा चुनावों की प्रक्रिया में लगभग दो महीने का वक्त लगेगा। इसमें साढ़े 18 करोड़ के आसपास मतदाता अपने मतदाधिकार का प्रयोग करेंगे। कुल मिलाकर बड़े स्तर पर होंगे ये विधानसभा चुनाव। हालांकि आशंका थी कि कोरोना की तीसरी लहर के चलते चुनाव प्रक्रिया शायद टल जाएगी, पर हालात का सघन जायजा लेने के बाद चुनाव आयोग इस नतीजे पर पहुंचा है कि चुनाव संपन्न कराए जाएंगे। वैसे भी चुनाव टालना इतना आसान नहीं है। आचार संहिता लागू होते ही विभिन्न जिलों में प्रशासन ने विधानसभा क्षेत्र स्तर तक पोस्टर और होर्डिंग्स हटवाने का काम तेज कर दिया है। अब राजनीतिक पार्टियों के लिए कोरोना संक्रमण के बीच हर दरवाजे तक पहुंचना एक बड़ी चुनौती होगी। पंचायत, नगर निगम और विधानसभा चुनावों में तो उम्मीदवार लगभग घर-घर जाते रहे हैं। अब विधानसभा क्षेत्र में यह उम्मीद करना सही नहीं होगा। जब वैश्विक महामारी खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही है तो चुनावों का चेहरा- मोहरा तो बदलेगा ही। अब तो चुनाव इस तरह से कराना होगा ताकि महामारी का असर न के बराबर ही हो। ये जिम्मेदारी सिर्फ चुनाव आयोग की नहीं है कि वह चुनावों को सफलतापूर्वक तरीके से सम्पन्न करावा ले। इसके लिए राजनीतिक दलों के नेताओं से लेकर कार्यकर्ताओं को भी सक्रिय होना होगा। मतदाताओं को भी लोकतंत्र के पर्व को संपन्न करवाने की बाबत मतदान की आहुति तो देनी ही होगी। खैर, सबको पता है कि चुनाव कार्यक्रम की घोषणा के साथ ही आदर्श चुनाव आचार संहिता भी लागू हो गई है। कोरोना की तीसरी लहर के डर और

भय के बीच दो बातों से संतोष हो सकता है। पहला, जिन राज्यों में चुनाव हो रहा है वहां पर लगभग सबको कोरोना का कम से कम एक टीका लग चुका है। यह स्थिति तब नहीं थी जब बिहार या पश्चिम बंगाल में चुनाव हुए थे। पंजाब में टीकाकरण की रफ्तार धीमी अवश्य रही है। सबको पता है कि कोरोना से बचने का एक मात्र तरीका यही है कि इसका टीका जल्द लगा लिया जाए। मारक पहनावा और सोशल डिस्टेंसिंग तो हैं ही। दूसरी बात यह है कि इन चुनावों में सभी राजनीतिक दल अपने मतदाताओं के पास आभासी दुनिया के मार्फत भी पहुंचना होगा। वे वर्युअल रैलियों पर ही ज्यादा जोर देंगे। इस तरह से भीड़ से बचा जा सकेगा। भारतीय जनता पार्टी इंटरनेट के विभिन्न माध्यमों पर काफी सशक्त है। टिवटर, यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम पर उसके फालोवरों की संख्या बहुत बड़ी है जो लगातार बढ़ रही है। वाट्सएप ग्रुपों का भी है उसका व्यापक संजाल है। ऐसे में वह जब चाहे वर्युअल मोड में सभा कर सकती है। बाकी दल भी सोशल मीडिया के महत्व को समझते हैं। चूंकि चुनाव लड़ने के लिए 40 लाख खर्च की सीमा तय हो चुकी है, ऐसे में विभिन्न पार्टियों के प्रत्याशियों को बहुत-सोच समझकर ही काम करना पड़ेगा, क्योंकि इस तकनीकी के युग में एक-एक पैसे का हिसाब रखना चुनाव आयोग के लिए मुश्किल काम नहीं है। हालांकि सभी राजनीतिक पार्टियां दाम्नी नेताओं से दूरी बनाने की बात तो कह रही हैं, लेकिन हर पार्टी को जिताऊ प्रत्याशी की भी जरूरत है। भारतीय जनता पार्टी उत्तर प्रदेश समेत सभी चार अन्य सूबों में किला फतेह करने की हर चंद कोशिश कर रही है। वह इस बाबत कसकर मेहनत भी कर रही है। फिलहाल वह अन्य दलों से मैदान में आगे नजर आ रही है। भाजपा ने विपक्ष के हाथ से लगभग सारे मुद्दे छीन लिए हैं। विभिन्न पार्टियों की चुनावी घोषणाओं के अलावा समग्रता में बात करें तो भाजपा जीवन को प्रभावित करने वाले लगभग सभी क्षेत्रों में कदम बढ़ा रही है। चाहे वह क्षेत्रीय समस्याओं के समाधान की बात हो अथवा विभिन्न जातियों, वर्गों को अपने पक्ष में करने की या फिर धार्मिक भावना को भुनाने की। पार्टी के तमाम बड़े नेता इस समय फील्ड में ही नजर आ रहे हैं। समाजवादी पार्टी सिर्फ उत्तर प्रदेश में सीमित है। कांग्रेस उत्तर प्रदेश में चौथे नंबर की पार्टी बनने के लिए ही लड़ रही है। उसके



लिए देश के इतने खास राज्य में अब कोई सम्मानजनक स्थान नहीं बचा है। हालांकि गांधी परिवार अपने को उत्तर प्रदेश वाला ही बताता है। आम आदमी पार्टी (आप) पंजाब और उत्तराखंड में नजर आ रही है। वह भी उत्तर प्रदेश में कहीं नहीं है। तो बहुत साफ है कि देश की सबसे बड़ी पार्टी भाजपा सभी पांच राज्यों में अपनी सरकार बनाने की कोशिश में जुटेगी। हालांकि विभिन्न दल उसे चुनौती तो देंगे ही खासकर उत्तर प्रदेश में समाजवादी और उत्तराखंड और पंजाब में कांग्रेस और आप। आगामी विधानसभा चुनाव में सारे देश को पंजाब के हालात पर नजर रखनी होगी। वहां लगातार स्थितियों प्रतिकूल बनी हुई हैं। किसान आंदोलन की आड़ में देश विरोधी तत्व खुलकर सामने आ रहे हैं। इन्हें पाकिस्तान में बैठे अपने आकाओं से हरसंभव खाद-पानी भी मिलता है। वहां कांग्रेस की सरकार है लेकिन कांग्रेस के भीतर टूट और वलेश जारी है। भाजपा विरोधी शक्तियां भी सक्रिय हैं। भाजपा नेताओं को रैलियां निकालने में अवरोध झेलने पड़ रहे हैं। पंजाब के नए पुलिस महानिदेशक और चुनाव आयोग को वहां पर निष्पक्ष चुनाव कराने होंगे। पंजाब देश का सीमावर्ती राज्य है। उसे राम भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता। वहां हाल ही में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के काफिले को भी घड़यंत्रपूर्वक रोका गया था। यह सारे देश ने देखा था। देश की चाहत है कि पंजाब विधानसभा चुनाव के दौरान मतदाता देश विरोधी ताकतों को खारिज कर देंगे। सारे देश की यह भी कामना है कि पांच राज्यों के चुनावों के दौरान कोरोना का असर सामने न आए। उम्मीद भी है कि कोरोना के व्यापक स्तर पर हुए टीकाकरण के चलते देश अपने लोकतांत्रिक पर्व को सही से मना लेगा। (लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं।)

## डब्ल्यूएचओ की चेतावनी को गंभीरता से लें

लक्ष्मीकांत चावला

भारत सरकार और विश्व के सभी देश विश्व स्वास्थ्य संगठन की सिफारिशों, सलाह और उसके द्वारा दी गई चेतावनी को बहुत गंभीरता से लेते हैं। कोई भी बीमारी या महामारी हो, इस संगठन की ओर ही पूरी दुनिया देखती है। लेकिन पर आश्चर्य है कि शराब पीने-पिलाने के काम में भारत सरकार और राज्य सरकारें चेतावनी को पूरी तरह अनसुना कर रही हैं। कितनी भयानक सच्चाई है कि वैश्विक तौर पर वर्ष 2016 में शराब से जुड़ी मौतों का आंकड़ा करीब तीस लाख था। यह सबसे बड़ा और नवीनतम आंकड़ा है। संगठन के अनुसार, बहुत अधिक शराब पीने से जो मौतें हुई हैं उनकी संख्या एड्स, हिंसा और सड़क हादसों में होने वाली मौतों को मिलाने से प्राप्त आंकड़ों से भी ज्यादा है। इस रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया भर में हर साल होने वाली बीस में से एक मौत शराब की वजह से होती है। डब्ल्यूएचओ के शराब और अवैध नशीले पदार्थों पर नजर रखने वाले प्रोग्राम की मैनेजर करिना फेरिएरा बार्जोस का कहना है कि दुनिया भर में हर साल शराब पीने वाले तीस लाख लोगों की मौत होती है। यूरोप में एक-तिहाई मौतें शराब पीने से होती हैं। कोरोना से मरे लोगों में अधिकतर शराब पीते थे। इसमें भी पुरुष ज्यादा हैं। एक अध्ययन के अनुसार, प्रति दस मृत संक्रमितों में से एक व्यक्ति शराब पीता था। अपनी रिपोर्ट में डब्ल्यूएचओ ने कहा कि करीब 23 करोड़ सत्तर लाख पुरुष और चार करोड़ साठ लाख महिलाएं शराब से जुड़ी समस्याओं का सामना कर रही हैं। भारत में शराब पीने वाले लोगों को चेतावने का काम दिल्ली के एम्स के डाक्टरों ने

किया। उनका कहना है कि महामारी में शराब पीने का असर रोग प्रतिरोधक क्षमता पर पड़ता है और संक्रमण का खतरा ज्यादा होता है। लेकिन अफसोस कि पंजाब, केरल और अन्य राज्य राजस्व के लिए लोगों की जान जोखिम में डाल शराब की अधिक दुकानें खोलने पर अमादा हैं। केवल भारत में ही 2018 में शराब पीने से 2 लाख साठ हजार लोगों की मौत हुई थी। इसीलिए एम्स के डाक्टरों तथा डब्ल्यूएचओ ने कहा था कि लोगों की सैहत का ध्यान रखते हुए लाकडाउन में शराब की दुकानों का बंद रहना जरूरी है। एक तरफ तो यह जीवन की रक्षा के लिए चेतावनी वाली रिपोर्ट है, पर दूसरी ओर पंजाब सरकार और कांग्रेस के प्रधान नजोत सिंह सिद्धू ने तो कुछ सप्ताह पहले कहा कि पंजाब में शराब पीने-पिलाने का ऐसा प्रबंध करेंगे जिससे सत्तर हजार करोड़ रुपया वार्षिक कमाई हो सके। उनका यह कहना था कि आर्थिक समृद्धि से पंजाब सुखी होगा। लेकिन यह नहीं बताया कि शराब पीने से कितने लोग महामारी, बीमारी, मृत्यु का शिकार हो जाएंगे। कितनी हिंसा होगी, पारिवारिक वलेश बढ़ेगा, परिवार टूटेंगे। माता-पिता में मतभेद से बचपन अनाथ हो जाएगा। लेकिन किसी ने नहीं कहा कि सिद्धू का शराब मॉडल हानिकारक और पंजाब के हित में नहीं है। इस समय देश और दुनिया में बड़ी विकट स्थिति है। कोरोना महामारी बहुत तेजी से फैल रही है। भारत के पांच राज्यों में चुनाव है। शराब घातक होने की रिपोर्ट डब्ल्यूएचओ ने दी, पर सरकारों ने तो मुनाफे के लिये शराब पिलानी है। चुनाव के दिनों में राजनीतिक दल शराब बांटते हैं। लोग बीमार हों, नशे की हालत में परिवारों में या समाज में अशांति फैलाएँ, दुर्घटनाओं में मारे जाएँ या कोरोना पीड़ित हों, राजनेताओं

को तो वोट चाहिए। यह लोकतंत्र का दुर्भाग्य है कि आजादी का अमृत महोत्सव मनाने वाली सरकारें इस वर्ष भी शराब की कोई कमी नहीं रखेंगी। उन्हें वोट चाहिए। कितना अच्छा हो अगर चुनाव आयोग शराब पीने-पिलाने वालों को चुनाव लड़ने से अयोग्य घोषित करे। न का अभाव झेल रहे भारतवासियों को राहत देने के लिए भारत सरकार मुफ्त अनाज बांटती है। यह सच है कि अनाज इतनी मात्रा में दिया जाता है कि कोई परिवार भूखा न रहे, लेकिन विडंबना यह है कि जिन परिवारों में शराब पीने के कारण अनाज दिया जाता है, उनमें एक बड़ी संख्या में शराब पीने वाले लोग भी हैं। देश के कुछ बुद्धिजीवी बड़े लंबे समय से यह आवाज उठा रहे थे कि जो लोग शराब स्वयं अपनी कमाई से खरीदकर पी सकते हैं वे अन्न क्यों भरने के लिए देश के लोगों के टैक्सों के पैसों से इन्हें मुफ्त में अनाज दिया जाए। भारत सरकार कानून बनाए कि जो लोग शराब पीते हैं उन्हें मुफ्त अनाज योजना से बाहर निकाल दिया जाए। वहीं चुनाव के दौरान कोई राजनीतिक पार्टी यह नहीं बताती कि चुनावों में मुफ्त शराब देने के लिए बजट की व्यवस्था कौन कर रहा है। चुनाव से पहले ही और महामारी की भयावहता के बीच यह जरूरी है कि शराब पीने वालों को नियंत्रित करने के लिए विशेष कदम उठाये जायें। इसका लाभ होगा कि कोरोना महामारी के दिनों में शराब न पीने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ेगी। बहुत अच्छा होगा कि डब्ल्यूएचओ के दिशा-निर्देशों पर चलते हुए शराब पीने-पिलाने और सरकारी गैर-सरकारी शराब की बिक्री पर रोक लगाई जाए।

## आज के कार्टून

चुनाव प्रचार



## मिट्टी

जग्गी वासुदेव

भारत की मिट्टी की दशा इतनी खराब हो गई है कि हम जो अन्न, सब्जियां, फल उगा रहे हैं, उनके पोषक तत्व विनाशकारी ढंग से कम होते चले जा रहे हैं। विशेष रूप से भारतीय सब्जियों में तो पिछले 25 सालों में पोषक तत्वों में 30% तक की गिरावट आई है। विश्व में हर तरफ डॉक्टर लोगों को मांसाहारी भोजन से शाकाहारी भोजन की तरफ मुड़ने को कह रहे हैं पर भारत में, डॉक्टर हमें मांस खाने की सलाह दे रहे हैं। क्यों? जब सारी दुनिया यह प्रयास कर रही है कि लोग मांसाहार छोड़ कर शाकाहारी जीवन का रास्ता अपनाएं तो हम, जो मुख्यतः एक शाकाहारी देश हैं, मांस की ओर इसलिए बढ़ रहे हैं क्योंकि हमारे शाकाहारी खाद्य पदार्थों में पर्याप्त पोषक तत्व नहीं हैं। और यह बस इसलिए है क्योंकि हमने अपनी मिट्टी की परवाह नहीं की है, उसे संभाला नहीं है। मिट्टी के सूक्ष्म पोषक तत्व इतने नाटकीय ढंग से कम हो गए हैं कि हमारे 3 वर्ष से कम उम्र के लगभग 70% बच्चे कुपोषित हैं, उनमें स्वस्थ रक्त की कमी है। अगर आप जंगल में जाएं और वहां की मिट्टी की जांच करें तो वह जीवन से भरपूर, बहुत अच्छी गुणवत्ता वाली मिलेगी। मिट्टी ऐसी ही होनी चाहिए। अगर मिट्टी की शक्ति कम हो जाती है, तो हमारे शरीर भी कमजोर पड़ जाएंगे-सिर्फ पोषण की दृष्टि से ही नहीं पर अत्यंत मूल रूप से। इसका अर्थ यह है कि हम जो अगली पीढ़ी पैदा करेंगे, वह हमसे कम शक्तिशाली होगी। यह तो मानवता के प्रति अपराध है। हमारी अगली पीढ़ी हमसे बेहतर होनी चाहिए। अगर वह हमसे कम है, तो इसका अर्थ यही है कि हमने मूल रूप से कुछ बहुत गलत किया है। यह भारत में बहुत बड़े रूप में हो रहा है क्योंकि हमारे देश की मिट्टी अपनी शक्ति खो रही है। अब यदि हमारी नदियां सूखती जाएंगी और मिट्टी खराब होती जाएगी तो हमें फिर अकाल जैसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। अगर हम अब, इसी समय, सही काम नहीं करेंगे तो इस भूमि पर भविष्य में लोग रह ही नहीं पाएंगे। सो, अब यही समय है जब हमें वास्तविक काम करना है। हम आज की खराब परिस्थिति को पूर्ण रूप से बदल सकते हैं, अगर अगले 10 से 25 वर्षों तक हम इस दिशा में लगातार अच्छे प्रयत्न करें।

## सू-दोक्कू नवताल -2019

5				1		9		4
1	7				3		6	
2			5	4		8		7
		6	2		7		5	
8		3				1		6
	5		1		8	3		
7		1		9	5			3
	8		6			4	9	
6		2		7				1

## सू-दोक्कू 2018 का हल

3	8	9	4	5	1	2	7	6
2	4	7	6	9	3	8	1	5
5	1	6	8	7	2	4	9	3
1	9	3	2	4	6	5	8	7
4	7	2	5	1	8	3	6	9
6	5	8	7	3	9	1	2	4
8	2	4	9	6	5	7	3	1
7	6	1	3	2	4	9	5	8
9	3	5	1	8	7	6	4	2

प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं। इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3 X 3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें।

## बारें से दारें-

- 1.आफताब शिवादासानी, एशा देओल, अमीषा पटेल की फिल्म-4
- 3.'दिल में तुझे बिटा के' गीत वाली शशि कपूर, शबाना आज़मी की फिल्म-3
- 6.'बेदोती तेरे प्यार ने दीवानी' गीत वाली फिल्म-2
- 7.इमरान हाशमी, उर्लाता गोखामी, की 'वो सन्धे वो बातें' गीत वाली फिल्म-3
- 9.'चंदा की चांदनी को देखा है' गीत वाली मिल्लिंद सोमण, विक्रम सलूजा, किरण झवेरी की फिल्म-3
- 11.बाँबी देओल, रिशे देशमुख, प्रियंका चोपड़ा की 'दिल तेरी दीवानगी में खो गया है' गीत वाली फिल्म-3
- 12.फिल्म 'रामकसम' में सुनील दत्त के साथ नायिका कौन थी-2
- 13.रामगोपाल वर्मा द्वारा निर्मित तथा मनीष श्रीवास्तव निर्देशित गीतम गुप्ता, निशा कोटारी की एक ताजा फिल्म-1
- 14.'जादू' नशा है' गीत वाली फिल्म-2
- 15.'एक बेचारा प्यार का मारा' गीत वाली जीवंत, हेमा मालिनी की फिल्म-3
- 18.नायक धर्मेन्द्र की फिल्म 'शोला और शबनम' की नायिका कौन-3
- 19.'लो मेरा प्यार ले लो' गीत वाली राकेश रोशन, योगिता वाली की फिल्म-4
- 22.राजेंद्र कुमार, वहीदा रहमान की 'दिले बेताब को सीने से' गीत वाली फिल्म-3
- 23.फिल्म 'छलिया' के गीत 'मेरे टूटे हुए दिल से' के गीतकार का प्रथम नाम-3
- 24.'छोटा सा घर होगा बादलों की छांव में' गीत वाली किशोर कुमार की फिल्म-3
- 26.जिमी शेरगिल, इरफान, ऋषिता भट्ट अभिनेता फिल्म-3
- 27.मिथुन चक्रवर्ती, अतुल अग्निहोत्री, पूजा भट्ट की फिल्म-3
- 29.शत्रुघ्न सिन्हा की 'बरखा रानी जरा जम के बरसो' गीत वाली फिल्म-3
- 31.'दो नैनो के पंख लगा कर' गीत वाली विनीत खन्ना, शबाना आज़मी की फिल्म-2

## फिल्म वर्ग पहेली- 2019

1	2	3	4	5
		6	7	8
9			10	
				13
	14		15	
				16
17		18		19
			20	21
22				23
		24	25	
				26
27	28		29	30
		31		32

## उपर से नीचे-

- 1.'मेरे दिल ने तड़प के' गीत वाली राकेश खन्ना, सिमपल कपाडिया की फिल्म-4
- 2.धर्मेन्द्र, रेखा की 'अरे रफता रफता देखो आंख मेरी लड़की है' गीत वाली फिल्म-3,3,1
- 3.'चांद सिमाशिश को करता हमारो' गीत वाली आमिर खान, काजोल की फिल्म-2
- 4.डिने, बिपशा की 'इतना में चारू तुझे' गीत वाली फिल्म-2
- 5.'दिल में जागी धड़कन जैसे' गीत वाली लक्की अली, गौरी कार्णिक की फिल्म-2
- 6.जीवंत, श्रीदेवी की 'नेनों में सपना, सपनों में यजना' गीत वाली फिल्म-5
- 8.नसीरुद्दीन शाह, जैकी श्राफ, नामा की 'मत पूछ मेरे महवूब सनम' गीत वाली फिल्म-2
- 10.'ये है रेशमी जुल्फों का' गीत वाली बिरुजोत, आशा पारेख की फिल्म-2,3
- 16.अजय देवगन, रवीना टंडन की 'मैं नये जमाने की लौल' गीत वाली फिल्म-2
- 17.'दर्पण को देखा तुने जब जब किया सिंगार' गीत वाली फिरोज खान, संजय खान, मुमताज की फिल्म-4
- 20.'धक धक दिल मेरी' गीत वाली फिल्म 'मनबूर' में सनी के साथ नायिका कौन थी-3
- 21.धर्मेन्द्र, आदित्य, नसीरुद्दीन शाह, सोनु वलिया, पद्मिनी, एकता की 'मेरी छतरी के नीचे आजा' गीत वाली फिल्म-4
- 23.'हां जुदाई से डरता है दिल' गीत वाली बाँबी देओल, नेहा की फिल्म-3
- 25.लकी अली और पाकिस्तानी अभिनेत्री मीरा की 'बेचैनियों में लम्हा' गीत वाली फिल्म-3
- 28.देव आनंद वाली फिल्म 'बनारसी बाबू' की नायिका कौन थी-2
- 30.अभि, टीना मूनोम की 'दरद दिल दर्द जिगर दिल में जगाया आपने' गीत वाली फिल्म-2

## फिल्म वर्ग पहेली-2018

प	हे	ली	जु	वे	दा	दो
र	ड	रा	स	डू	क	
दे	व	र	दा	ग	त्य	अं
स	र	शि	ख	शि	का	र
दा	न	व	च	म	जा	ल
ख	न	रा	ज	ह	ठ	मु
ली	ओ	म	त	श	रा	वी
मा	सु	म	फ	दा	मा	द
र	का	पौ	रे	ट	क	जू
हो	रा	व	अ	न	क	हो





### चीनी ताइपे एशियाई कप के लिए पहुंचने वाली पहली टीम, भारतीय टीम की उड़ान में विलंब

मुंबई । कोरोना महामारी की तीसरी लहर को लेकर आशंकाओं के बीच चीनी ताइपे की टीम एएफसी महिला एशियाई कप फुटबॉल के लिए यहां पहुंचने वाली पहली टीम बन गई जबकि भारतीय टीम की कोच्चि से उड़ान में विलंब हो गया। भारतीय टीम बाजील दौरे के बाद से कोच्चि में अभ्यास शिविर में है। उसकी उड़ान में विलंब होने से शाम का मीडिया सत्र स्थगित कर दिया गया है। भारत को ईरान (20 जनवरी), चीनी ताइपे (23 जनवरी) और चीन (26 जनवरी) से खेलना है। भारत 1980 के बाद पहली बार टूर्नामेंट की मेजबानी कर रहा है और इसके जरिए उसकी नजरें 2023 फीफा विश्व कप में जगह बनाने पर है। टूर्नामेंट के मेजबानों में पुणे के बाहर स्थित बालेवाड़ी खेल परिसर भी है जहां 2008 राष्ट्रमंडल युवा खेल समेत कई बड़े टूर्नामेंटों का आयोजन हुआ है।



# पीवी सिंधू इंडिया ओपन के क्वार्टर फाइनल में पहुंची, साइना बाहर



नई दिल्ली ।

दो बार की ओलंपिक पदक विजेता पीवी सिंधू और एचएस प्रणय योनेक्स स्नरराइज इंडिया ओपन बैडमिंटन टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल में पहुंच गए जबकि मालविका बंसोड़ ने अपनी आदर्श साइना नेहवाल को

रैंकिंग में 111वें स्थान पर काबिज बंसोड़ को दुनिया की पूर्व नंबर एक खिलाड़ी को हराने में 34 मिनट लगे। बंसोड़ ने कहा, 'यह साइना नेहवाल से मेरा पहला मुकाबला था। मैंने जब से बैडमिंटन खेलना शुरू किया, वह मेरी आदर्श रही हैं। उनके खिलाफ इंडिया ओपन जैसे बड़े टूर्नामेंट में

खेलना सपना सच होने जैसा था। यह मेरे कैरियर का सबसे बड़ी जीत में से है।' घुटने और ग्रीन को चोट से उबरने के बाद खेल रही साइना ने पहले दौर में जीत दर्ज की थी लेकिन उन्होंने कहा कि अभी फिटनेस के लिये काफी मेहनत करनी होगी। उन्होंने कहा, 'आज मैं अच्छा मूव कर रही थी लेकिन फिटनेस का स्तर वह नहीं है जो खेल चाहिए। मैं यही देखने के लिए यहां खेल रही थी कि कितना सुधार करना होगा।' इससे पहले शीर्ष वरीयता प्राप्त सिंधू ने हमवतन इरा शर्मा को 21.10, 21.10 से हराया। अब उनका सामना अम्बिता चलिहा से होगा जिसने याएले होयाड को 21.17, 21.14 से मात दी। बंसोड़ का सामना भारत की आकर्षि करश्यप से होगा। आकर्षि ने

हमवतन के युरा मोपाटिन को 21.10, 21.10 से शिकस्त दी। प्रणय को वॉकओवर मिला क्योंकि मिथुन मंजूनाथ ने कोरोना पॉजिटिव होने के कारण टूर्नामेंट से नाम वापस ले लिया। पुरुष वर्ग में शीर्ष वरीयता प्राप्त किदाम्बी श्रीकांत, युगल खिलाड़ी अश्विनी पोन्पा, रितिका राहुल उकार, त्रिसा जाली, सिमन अमन सिंह और खुशी गुप्ता ने कोरोना पॉजिटिव पाए जाने के बाद नाम वापस ले लिया। प्रणय का सामना लक्ष्य सेन और स्वीडन के फेलिक्स स्टुटे के बीच होने वाले मैच के विजेता से होगा। समीर वर्मा के अभियान का भी दूसरे दौर में अंत हो गया जिन्होंने मांसपेशी में खिंचाव के कारण कनाडा के ब्रेन यांग के खिलाफ मुकाबला बीच में ही छोड़ दिया।

## अदालत ने सीआईसी के आदेश पर रोक लगाने से इंकार किया, हॉकी इंडिया को नहीं मिली राहत

नई दिल्ली ।

दिल्ली उच्च न्यायालय ने गुरुवार को हॉकी इंडिया की एक याचिका पर केंद्रीय सूचना आयोग (सीआईसी) के उस आदेश पर रोक लगाने से इंकार कर दिया है जिसमें हॉकी इंडिया को सूचना के अधिकार (आरटीआई) अधिनियम के तहत अपने सदस्यों और कर्मचारियों के वेतन की सूची सहित कुछ जानकारी का खुलासा करने के निर्देश दिये गये थे। न्यायमूर्ति रेखा पल्ली ने कहा कि हॉकी इंडिया एक राष्ट्रीय खेल महासंघ (एनएफएस) और एक सार्वजनिक प्राधिकरण है। ऐसे में वह इस तरह की जानकारी का खुलासा करने से इंकार नहीं कर सकती। उन्होंने कहा, 'प्रथम दृष्टया मुझे नहीं लगता कि सीआईसी के आदेश में कुछ गलत है। हॉकी इंडिया एक सार्वजनिक प्राधिकरण है, इसलिए आप कर्मचारियों के वेतन का खुलासा करने से मना नहीं कर सकते, चाहे वह कितना भी अधिक या कम क्यों न हो। आपके कर्मचारियों के वेतन के सार्वजनिक होने से क्या दिक्कत है। आप एक सार्वजनिक प्राधिकरण हैं जिसे काफी मदद, लाभ और धन मिल रहा है।' केंद्र सरकार ने भी सीआईसी के



13 दिसंबर, 2021 के आदेश का समर्थन करते हुए कहा कि यह राष्ट्रीय खेल संहिता और केंद्र के दिशानिर्देशों के अनुरूप है। हॉकी इंडिया ने सीआईसी के 13 दिसंबर, 2021 के आदेश को चुनौती दी है, जिसमें उसे आरटीआई के तहत अपने सदस्यों की पूरी सूची उनके पदनाम और आधिकारिक पता, उनके कर्मचारियों के नाम, उनके वेतन और सकल आय का ब्यौरा देने का निर्देश दिया गया था। याचिकाकर्ता ने दावा किया कि सीआईसी का आदेश पूरी तरह से अवैध, मनमाना, अनुचित और कानून के स्थापित सिद्धांतों का उल्लंघन करते हुए पारित किया गया था।

## एडीलेड इंटरनेशनल : मारिन सिलिच सेमीफाइनल में, कोको गॉ अंतिम चार में



सिडनी : पूर्व अमेरिकी ओपन चैम्पियन मारिन सिलिच ने अमेरिका के टॉमी पॉल को 6.4, 2.6, 6.3 से हराकर दूसरे एडीलेड इंटरनेशनल टेनिस टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया। चौथी वरीयता प्राप्त सिलिच ने इस साल पांच मैचों में से 4 जीते और पिछले सप्ताह पहले

एडीलेड इंटरनेशनल के सेमीफाइनल में पहुंचे थे जिसमें उन्हें रूस के कारेन ख्याचानोव ने हराया। उन्होंने अंतिम-8 में जाउमे मुनार को हराया था। महिला वर्ग में तीसरी वरीयता प्राप्त अमेरिका की कोको गॉ ने क्रोएशिया की अना कोजु को 6.3, 6.4 से हराकर अंतिम चार में जगह बनाई। सिडनी टेनिस क्लासिक में चौथी वरीयता प्राप्त एस्तोनिया की एनेट कोटावेट ने ट्यूनीशिया की ऑस जबाउर के खिलाफ क्वार्टर फाइनल का पहला सेट जीत लिया था जब कमर में चोट के कारण जबाउर को कोर्ट छोड़ना पड़ा। अब कोटावेट का सामना तीसरी वरीयता प्राप्त बारबारा केइसिकोवा से होगा जिसने फ्रांस की कैरोलिन गार्सिया को 6.0, 6.2 से मात दी। पुरुष वर्ग में शीर्ष वरीयता प्राप्त असलान कारात्सेव ने 5वीं वरीयता प्राप्त लॉरेजो सोनेगो को 6.2, 3.6, 6.2 से हराया।

## कोरोना संक्रमण को देखते हुए आईपीएल को लेकर बीसीसीआई बना रहा वैकल्पिक योजना

मामले बढ़े तो दक्षिण अफ्रीका या श्रीलंका में भी हो सकता है आयोजन

मुंबई ।

देश में कोरोना संक्रमण के बढ़ते मामलों को देखते हुए भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) अब वैकल्पिक योजना पर भी काम कर रहा है। हाल ही में बढ़ते हुए कोरोना संक्रमण के कारण ही बीसीसीआई ने रणजी ट्रॉफी, सीके न्याडू ट्रॉफी जैसे घरेलू टूर्नामेंटों को स्थगित कर दिया था। एक रिपोर्ट के अनुसार अगर हालात बिगड़ते हैं तो बीसीसीआई आईपीएल को दक्षिण अफ्रीका या श्रीलंका में भी आयोजित कर सकता है। इससे पहले साल 2009 में इसका समाप्ति चुनौती के कारण आईपीएल दक्षिण अफ्रीका में आयोजित किया गया था। बीसीसीआई के एक अधिकारी ने कहा, 'हम हर समय संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) पर निर्भर नहीं रह सकते हैं, इसलिए हमने अधिक विकल्प तलाशने का फैसला किया है।' भारत का समय दक्षिण अफ्रीका से 3 घंटे 30 मिनट आगे है। इससे मैच जल्दी शुरू हो सकते हैं। पिछले कुछ वर्षों में खिलाड़ियों ने अक्सर आईपीएल खेलों के देर रात खत्म होने की शिकायत की है। लगातार हवाय यात्रा के साथ-साथ अनिश्चितकालीन मैच टाइमिंग के चलते भी खिलाड़ियों को आराम करने और तरोताजा होने में कम समय मिलता है। बीसीसीआई इस लिए भी दक्षिण अफ्रीका में



अधिक संभावना देख रहा है क्योंकि यहां भारत ए भी गयी थी और भारतीय टीम भी अभी वहां खेल रही है।

मेजबान दक्षिण अफ्रीकी क्रिकेट बोर्ड ने भारतीय टीम के लिए विशाल होटल और रिजिटर्स के इंतजाम किए हैं, जिससे

बीसीसीआई काफी प्रभावित है क्योंकि इससे खिलाड़ी कमरों से निकलकर घूम सकते हैं। महामारी के समय में खेल फिर से शुरू होने के बाद से खिलाड़ियों के मानसिक स्वास्थ्य को लेकर चिंताएं हैं, क्योंकि वे लंबे समय से गुवा-बल में रह रहे हैं।

## साइना शुरू से मेरी आदर्श रही हैं, उनके खिलाफ जीत करियर में सबसे बड़ी : मालविका

नयी दिल्ली,

साइना नेहवाल का खेल देखकर बड़ी हुई युवा बैडमिंटन खिलाड़ी मालविका बंसोड़ ने गुरुवार को इंडिया ओपन में ओलंपिक कांस्य पदक विजेता के खिलाफ अपनी जीत को अपने करियर की सबसे बड़ी जीत में से एक करार दिया। मालविका ने हाल में चोटों से परेशान रही साइना को दूसरे दौर में 21-17, 21-10 से हराया। मालविका ने मैच के बाद कहा, 'मुझे अभी तक विश्वास नहीं हो रहा है। यह शानदार अहसास है और मैं जीत के बाद वास्तव में उत्साहित हूँ।' उन्होंने कहा, 'वह मेरी आदर्श रही हैं

क्योंकि वह एक दशक से अधिक समय से भारत में महिला बैडमिंटन की ध्वजवाहक रही हैं। मैंने उन्हें खेलते हुए देखकर शुरूआत की और मेरे खेल पर उनका काफी प्रभाव है।' मालविका ने कहा, 'खेल की उनकी शैली मुझे पसंद है। उनके पास काफी शक्ति है और इसलिए मुझे उनका खेल पसंद है। आज मैंने आलराउंड खेल खेला। इसमें और कुछ खास नहीं था।' यह पहला अवसर था जबकि किसी बड़े टूर्नामेंट में साइना और मालविका आमने सामने थीं।

मालविका ने कहा, 'वह हमेशा मेरी आदर्श रही हैं। इसलिए उनके खिलाफ खेलना सपना सच होने जैसा था और वह भी इंडियन

ओपन जैसे बड़े मंच पर। यह जीत एक सुपर 500 टूर्नामेंट में मिली। यह मेरे लिए एक बड़ी उपलब्धि है। यह मेरे करियर की अब तक सबसे बड़ी जीत में से एक है।' इस बीच साइना ने कहा कि उन्हें खुशी है कि वह दो मैच खेलने में सफल रही जबकि अभी वह पूरी तरह से फिट नहीं हैं। साइना ने कहा, 'आज मैं कोर्ट पर 'मूव' कर रही थी लेकिन मेरी फिटनेस वैसी नहीं है जैसी होनी चाहिए थी।' यहां अपनी स्थिति का आकलन करने के लिये आयी थी। मेरा शरीर अच्छा है लेकिन फिटनेस स्तर पर सुधार की जरूरत है।'



## कनेरिया के कोच बनने की उम्मीदों को लगा झटका

कराची । पाकिस्तान क्रिकेट टीम के दिग्गज सिमर दानिश कनेरिया के घरेलू क्रिकेट या 20-20 लीग में कोच के तौर पर काम करने की अपील को सिंध उच्च न्यायालय ने खारिज कर दिया है। कनेरिया कोच बनकर खेल की मुख्यधारा में शामिल होना चाहते थे। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के मुख्य कानूनी अधिकारी तफजुल रिजवी ने कहा है कि कनेरिया को सिंध हार्ड कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश की बेंच ने खारिज कर दिया है। कनेरिया की अपील का विरोध करते हुए रिजवी ने कहा था कि जब तक इंग्लैंड एंड वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) उन्हें मंजूरी नहीं देता, पीसीबी उन्हें मुख्यधारा में आने की इजाजत नहीं दे सकता। पीसीबी ने अदालत में दलील दी कि आईसीसी की भ्रष्टाचार रोधी संहिता के अनुच्छेद 6.5 के अनुसार, वह अपने अधिकार क्षेत्र के तहत क्रिकेट के सभी प्रारूपों में ईसीबी के फैसले को लागू करने के लिए बाध्य है। अब फैसले में राहत के लिए कनेरिया को ईसीबी में अपील करनी होगी या ब्रिटेन की किसी अदालत में याचिका दायर करनी होगी। कनेरिया को इस मामले में अभी तक कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है।

## अंडर-19 विश्वकप आज से, भारतीय टीम है खिताब की प्रबल दावेदार

जॉर्जटाउन ।

वेस्टइंडीज में शुक्रवार से अंडर 19 विश्व कप क्रिकेट टूर्नामेंट शुरू हो रहा है। इसमें 16 टीमों में भाग ले रही हैं। खिताब की प्रबल दावेदार पर उतर रही भारतीय टीम इसमें ग्रुप बी में शामिल है, वहीं आस्ट्रेलियाई टीम ग्रुप डी में है। पहली बार कैरिबियाई धरती पर हो रहे टूर्नामेंट में 16 टीमों को चार समूहों में बांटा गया है। बांग्लादेश टीम को ग्रुप ए में रखा गया है। पाकिस्तान और अफगानिस्तान ग्रुप सी में हैं। बीजा मामलों में देरी के कारण अफगानिस्तान टीम देर से यहां पहुंची है इस कारण ग्रुप सी का कार्यक्रम भी बदला है।

में पहुंचेगी। कोरोना संक्रमण को देखते हुए इस टूर्नामेंट में सभी टीमों का बायो बबल के नियमों का पालन करना होगा। यहां पहुंची पाक और जिम्बाब्वे की टीमों में कोरोना संक्रमण के मामले आए हैं जबकि न्यूजीलैंड ने अपने पृथकवास नियमों के कारण टूर्नामेंट से नाम वापस ले लिया अब उसकी जगह स्कॉटलैंड खेल रही है। इस टूर्नामेंट में मेजबान वेस्टइंडीज का सामना पहले दिन ऑस्ट्रेलिया से होगा जबकि स्कॉटलैंड की टीम श्रीलंका से खेलेगी। वहीं भारतीय टीम अपना पहला मैच शनिवार को गयाना में दक्षिण अफ्रीका से खेलेगी। भारतीय टीम ने अपने शुरूआती दोनो अभ्यास मैच जीतकर लय हासिल की है और वह खिताब की

प्रबल दावेदार बनकर उभरी है। **भारत** : रिकॉर्ड चार बार की चैम्पियन भारतीय टीम सबसे प्रबल दावेदार है। भारतीय टीम एशिया कप जीतकर दुबई से सीधे यहां आई है। पांच दिन के कड़े पृथकवास के बाद कप्तान यश धुल की इस टीम ने अभ्यास मैच में ऑस्ट्रेलिया और वेस्टइंडीज को हराया है। भारत को सलामी बल्लेबाज हर्नूर सिंह, दिल्ली के बल्लेबाज और कप्तान यश, शेख रशीद और तेज गेंदबाज राजवर्धन हंगरगेकर से काफी उम्मीदें होंगी। **ऑस्ट्रेलिया** : तीन बार की चैम्पियन ऑस्ट्रेलिया दूसरी प्रबल दावेदार है। कूपर कोनोली टीम के कप्तान है और 2020 में उन्होंने वेस्टइंडीज के खिलाफ एक प्लेआफ

मैच में 53 गेंदों में 64 रन बनाए थे। टीम के पास कई प्रतिभाशाली खिलाड़ी हैं। **पाकिस्तान** : पाकिस्तान ने 2004 और 2006 में खिताब जीते थे जब सरफराज अहमद, वहाब रियाज और इमाद वसीम टीम का हिस्सा थे। शाहीन शाह अफरीदी 2018 अंडर 19 विश्व कप से ही निकले हैं। कासिम अकरम की कप्तानी वाली टीम के कोच पूर्व बल्लेबाज एजाज अहमद हैं। **इंग्लैंड** : इंग्लैंड ने 24 साल पहले एकमात्र अंडर 19 खिताब जीता था लेकिन 2014 में तीसरे स्थान पर रही। पिछली बार पहले दौर से ही आगे नहीं बढ़ सकी थी। इस साल कप्तान टॉम प्रेस्ट को बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद है।

## शमी के समर्थन में उतरे विराट

केपटाउन। भारतीय टीम के तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी को दक्षिण अफ्रीका के बीच खिलाफ यहां जारी तीसरे क्रिकेट टेस्ट मैच के तीसरे दिन अंपायर ने डेनजर एरिया में जाने पर चेतावनी दी। इस मामले को लेकर टीम इंडिया के कप्तान विराट कोहली शमी के समर्थन में सामने आये और उनकी अंपायर से बहस भी हुई। वहीं रीप्ले में दिखा कि शमी का पांव डेनजर एरिया के बाहर है, इसके बाद विराट, इरासमस के पास गए और वॉर्चिंग के बारे में बात की। शमी ने हालांकि इसके बाद वापसी की और तीनों गेंदों के बीच दो विकेट हासिल किए। गौरतलब है कि पिच पर विकेट के ठीक सामने वाले हिस्से को डेनजर एरिया कहते हैं। बल्लेबाजों के लिए ये क्षेत्र काफी अहम होता है। क्रीज की तरह ही इसे पेंट करके मार्क नहीं किया जाता। यह विकेट के बीच में एक कार्यात्मक हिस्सा होता है। नियमों के मुताबिक, कोई भी बोलर अपने फॉलो-थ्रू में वहां लैंड नहीं कर सकता। वहीं अगर ऐसा नहीं किया जाएगा तो खिलाड़ियों की स्पाइक्स से पिच का खराब होना तय है। अगर कोई टीम 'जानबूझकर पिच खराब करेगी तो इससे विरोधी टीम को नुकसान होता है। गेंदबाज के फॉलोथ्रू से पिच खुरदुरी हो जाती है। यह असमान उछाल और टर्न का कारण बन सकती है। इन रफ पैचेज का लाभ खासतौर पर स्पिनरों ही उठाते हैं। इसलिए यदि कोई गेंदबाज इस क्षेत्र की ओर जाता है तो अंपायर तुरंत टोकता है। पहली बार गलती करने के बाद अंपायर सुधरने का एक और मौका देता है, लेकिन अगर गेंदबाज फिर भी नहीं मानता तो अंपायर तुरंत गेंदबाजों से हटा सकता है।



## मुक्केबाज लवलीना बनी डीएसपी

गुवाहाटी ।

महिला मुक्केबाज लवलीना बोरगोहेन को असम पुलिस में डीएसपी का पद मिला है। लवलीना ने टोक्यो ओलंपिक में कांस्य पदक जीता था। मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा व पुलिस महानिदेशक भास्कर ज्योति महल , ने लवलीना की वर्दी पर डीएसपी के तौर पर सितारा बैज लगाए। इसके साथ जनता भवन के राज्य मुख्यालय में आयोजित समारोह के दौरान लवलीना को नियुक्ति पत्र भी सौंपा गया। लवलीना अब आने वाले वर्षों में असम पुलिस के लिए काम करेंगी। उन्होंने कहा कि ओलंपिक कांस्य जीतना राज्य के लिए अब तक का सबसे गौरवपूर्ण क्षण है। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर यह भी घोषणा की है कि लवलीना को मासिक वेतन के अलावा मुक्केबाजी प्रशिक्षण के लिए 1 लाख रुपए अतिरिक्त दिए जाएंगे। इसके साथ ही सरमा ने कहा कि लवलीना के लिए गुवाहाटी में ही एक अंतरराष्ट्रीय स्तर के कोच की व्यवस्था भी की जाएगी। लवलीना ने डीएसपी नियुक्त होने के बाद कहा कि असली नौकरी करना अच्छा लगता है। अब मैं असम पुलिस में काम करते हुए देश की सेवा कर सकती हूँ हालांकि मेरा ध्यान अच्छा खेलते अपने राज्य और देश के लिए पदक जीतना है। इसलिए मैं ट्रेनिंग पर ध्यान दूंगी और मुक्केबाजी से संन्यास के बाद ही नौकर करूंगी।

## टेस्ट क्रिकेट में भी 'फ्री हिट' शुरू करें : स्टेन



केपटाउन ।

दक्षिण अफ्रीका के पूर्व तेज गेंदबाज डेल स्टेन ने कहा है कि टेस्ट क्रिकेट में फ्री हिट नियम को फिर शुरू किया जाना चाहिये। स्टेन ने कहा कि इससे निचले क्रम के बल्लेबाजों को लंबे ओवरों से बचने में सहायता मिलेगी। सीमित ओवर के क्रिकेट में अगर गेंदबाज पर की गलती से 'नो बॉल' डालता है तो बल्लेबाजी कर रही टीम को 'फ्री हिट' दिया जाता है। स्टेन ने बुधवार को ट्वीट किया, 'टेस्ट क्रिकेट में भी 'नो बॉल' के लिये 'फ्री हिट' दिया जाना चाहिये, इससे निचले क्रम के बल्लेबाजों को लाभ होगा क्योंकि कई बार उन्हें आठ से नौ गेंद का लंबा ओवर खेलना पड़ता है। उन्होंने कहा, 'निचले क्रम के बल्लेबाजों के लिये शीर्ष तेज गेंदबाजों को छह गेंद का सामना करना ही कठिना होता है।' स्टेन की यह बात भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच अंतिम टेस्ट के दौरान कही। उन्होंने भारतीय टीम के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह की भी प्रशंसा की जिन्होंने 42 रन देकर पांच विकेट लिए।

शरीर में उत्पन्न होने वाली कई नई-पुरानी व्याधियों को दूर करने के लिए जापान की सकनीरा एसोसिएशन द्वारा पानी के प्रयोग का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। पानी के द्वारा रोगों को दूर करने की यह सादी-सरल विधि है। भारत जैसे गरीब देश के लिए तो यह विधि बिना पैसा खर्च की चमत्कारी पद्धति सिद्ध हो सकती है।

# सेहत का राज

## बस 4 ग्लास पानी एक साथ

सिरदर्द, उच्च रक्तचाप, खून की कमी, मोटापा, बेहोशी, दमा, खांसी, लीवर की कमजोरी, पेशाब की बीमारी, गैस, कब्ज, एसीडिटी, कमजोरी, आंख की बीमारी, मानसिक रोग, महिलाओं को होने वाली बीमारियां एवं शरीर में उत्पन्न होने वाली कई नई-पुरानी व्याधियों को दूर करने के लिए जापान की सकनीरा एसोसिएशन द्वारा पानी के प्रयोग का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। पानी के द्वारा रोगों को दूर करने की यह सादी-सरल विधि है। भारत जैसे गरीब देश के लिए तो यह विधि बिना पैसा खर्च की चमत्कारी पद्धति सिद्ध हो सकती है। कमी है तो बस इसके जनसाधारण के बीच प्रसार की।

### पानी प्रयोग की विधि क्या है

सुबह उठकर बिस्तर में बैठ जाएं और चार बड़े ग्लास भरकर (लगभग एक लीटर) पानी एक ही समय एक साथ पी जाएं। ध्यान रहे कि पानी पीने के पहले मुंह न धोएं, न ब्रश करें तथा शौचकर्म भी न करें। पानी पीने के बाद थूकें नहीं। पानी पीने के पौन घंटे बाद आप ब्रश/दातू, मुंह धोना, शौचकर्म इत्यादि नित्यकर्म कर सकते हैं। जो व्यक्ति बीमार या कमजोर काया के हैं और वे एक साथ चार ग्लास पानी नहीं पी सकते तो उन्हें शुरुआत एक-दो ग्लास पानी से करना चाहिए तथा धीरे-धीरे चार ग्लास तक बढ़ाना चाहिए। साथ ही भोजन करने के बाद लगभग दो घंटे पानी न पिया जाए तो अति उत्तम रहेगा। चार ग्लास पानी पीने की यह विधि स्वस्थ या बीमार, सभी के लिए अति लाभदायक सिद्ध हुई है। सकनीरा एसोसिएशन के अनुभव द्वारा यह सिद्ध किया गया है कि कई बीमारियां इस प्रयोग से निम्नलिखित समय में दूर होती जाती हैं।

- मधुमेह एक माह के लगभग।
- उच्च रक्तचाप एक माह के लगभग।
- गैस दो सप्ताह के लगभग।
- टी.बी.छ. माह के लगभग।
- कब्जियत- दो सप्ताह के लगभग।

## सावधान रहें ताजातरीन सब्जियों से

यू तो हम हर रोज तरह-तरह की सब्जियां खाते हैं लेकिन वे ताजा होती हैं इस बारे में कुछ भी कहना मुश्किल है। हर रोज सामने आ रही बीमारियों के पीछे कहीं न कहीं एक कारण यह भी है कि आज इंसान को शुद्ध और ताजा आहार नसीब नहीं हो पा रहा। मिलावट और रसायन संरक्षण से सब्जियां भी अछूती नहीं हैं।

सब्जी विक्रेता आज या तो रसायन में संरक्षित कर रखी गई सब्जियां बेचते हैं या फिर मुनाफे के चक्कर में लौकी जैसी सब्जियों का आकार बढ़ाने के लिए उनमें ऑक्सिडेशन इंजेक्शन लगा देते हैं। आहार विशेषज्ञ का कहना है कि लोगों को अपने आहार में ताजा सब्जियों का इस्तेमाल करना चाहिए और ऐसी सब्जियों के सेवन से बचना चाहिए जो बहुत दिनों से संरक्षित कर रखी गई हों। ताजा सब्जियां जहां खाने में स्वादिष्ट और पौष्टिक होती हैं वहीं उनमें विटामिन काबोहाइड्रेट और प्रोटीन जैसे पोषक तत्व भी प्रचुर मात्रा में होते हैं लेकिन सावधानी यह जरूरी है कि सब्जियां सचमुच ताजा हो न कि उन्हें इंजेक्शन से ताजा बनाया गया हो। बाजार से सब्जियां खरीदते समय बहुत सतर्क रहने की जरूरत है। यदि ऐसी सब्जी खरीद ली जाती है, जिसका आकार बढ़ाने के लिए या चमकदार दिखाने के लिए किसी रसायन का इस्तेमाल किया गया हो तो इससे पेट में अल्सर अम्लता और गैस बनने जैसी समस्याएं पैदा हो सकती हैं। सब्जियों को संरक्षित कर रख दिए जाने



उनके पोषक तत्वों में कमी आ जाती है, जो स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद नहीं है। ऐसा नहीं होना चाहिए कि एक बार सब्जी बनाने के बाद उसे बार-बार गर्म करके रात तक इस्तेमाल किया जाता रहे। ऐसा करने से उसके पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं और शरीर को कोई फायदा नहीं पहुंचता। एक बार सब्जी बनाने के बाद उसे कुछ घंटों के भीतर ही इस्तेमाल कर लेना चाहिए। सब्जी को फ्रिज में रख देने का मतलब यह नहीं है कि वह जरा भी खराब नहीं होगी। फ्रिज में रखी सब्जी को भी छह-सात घंटे के भीतर इस्तेमाल कर लेना चाहिए। इसके बाद उसके पोषक तत्वों में हास होने लगता है।



## सिर्फ 5 आहार ढंड में रखे सदाबहार

सर्द मौसम में व्यायाम करके अपने शरीर को गर्म व ऊर्जावान बनाए रखने के साथ ही अपने भोजन में ऐसी चीजों को शामिल करना भी जरूरी हो गया है जिनकी कम मात्रा लेने पर भी शरीर को भरपूर कैलोरी मिले। पेश है 5 ऐसे आहार जो आपको सर्दियों में तरोताजा और स्वस्थ बनाएं।

### सलाद

आपके सुबह व शाम के भोजन में सलाद के लिए एक सुरक्षित स्थान होना चाहिए। यदि आप कम कैलोरी और हाई फाइबर वाला फूड लेना चाहते हैं तो सलाद आपके लिए बेहतर विकल्प है। सलाद के लिए प्रयोग में आने वाली कच्ची सब्जियों व फलों में एंटी ऑक्सीडेंट, नेचुरल एंजाइम्स और फाइबर होते हैं जो शरीर के कोलेस्ट्रॉल को कम करने के साथ ही भोजन के पाचन में भी सहायक होते हैं। इससे आपका वजन भी नियंत्रित रहता है। यदि आप सेहत के प्रति जागरूक हैं तो आपको रोजाना कम से कम एक बड़ा कप हरी सलाद खानी चाहिए।

### छिलके वाली दालें

छिलके वाली दालों में प्रोटीन की भरपूर मात्रा होती है। प्रोटीन के साथ ही दालों में फोलिक एसिड, विटामिन ए, विटामिन बी आदि होता है। इनका रोजाना सेवन शरीर में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को कम करता है जिससे आपका वजन नियंत्रित होता है।

### पीले व खट्टे फल

फलों में सबसे अधिक गुणकारी खट्टे फल होते हैं। पीले व नारंगी रंग के फलों में बीटा कैरोटिन व एंटीऑक्सीडेंट्स होते हैं। खट्टे फल विटामिन सी, कैल्शियम, मिनरल, फाइबर आदि का प्रमुख स्रोत होते हैं जो शरीर के विकास के लिए उपयोगी होते हैं। नींबू में मौजूद पेक्टिन शरीर में जमा वसा को गलाता है और पाचन प्रक्रिया को भी धीमा करता है जिससे खाने के बाद भी लगने वाली भूख शांत होती है। खट्टे फलों का सेवन डाइबिटीज, कैंसर, एनीमिया, मोतियाबिंद, अस्थमा, किडनी में पथरी आदि रोगों में लाभदायक होता है। इन फलों को निरंतर सेवन से हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता में भी वृद्धि होती है।

### तरल, जूस व ड्रिंक

भोजन के पूर्व या पश्चात यदि आप तरल पदार्थ लेने के आदी हैं तो इस सर्द मौसम में भी आप छाछ, लस्सी, दही व फ्रूट जूस का सेवन कर सकते हैं। दही, छाछ व ताजे फलों का रस आपके शरीर के लिए गुणकारी होता है। खट्टे फलों में नींबू का रस वजन कम करने, डेटल केयर, बुखार, रक्त शुद्धि आदि में सहायक होता है। भोजन के बाद ली जाने वाली छाछ में दूध की अपेक्षा फेट की मात्रा कम होती है। यदि हम लिक्विड में नारियल पानी की बात करें तो इसमें पोटेशियम की भरपूर मात्रा होती है, जो ब्लड प्रेशर को नियंत्रित रखने के साथ ही शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को भी बढ़ाता है। इसमें कार्बोहाइड्रेट, शर्करा व वसा की कम मात्रा होती है।

### अंकुरित अनाज

अंकुरित किए जाने से अनाज में पोषक तत्वों की मात्रा दुगुनी हो जाती है। चना, मूंग, सोयाबीन, मटर आदि को अंकुरित करके खाया जा सकता है। सर्दियों के मौसम में नाश्ते में अंकुरित अनाज को शामिल करना स्वास्थ्य के लिहाज से बेहतर है। भरपूर अंकुरित अनाज का सेवन आप सूूप या सलाद के साथ भी कर सकते हैं। सुलभ, सरता, बनाने में आसान व पौष्टिक होने के कारण अंकुरित अनाज का सेवन आपके शरीर के लिए लाभदायक होता है। विटामिन, मिनरल्स, प्रोटीन, एंटी ऑक्सीडेंट आदि की भरपूर मात्रा होने के कारण अंकुरित अनाज हमारे भोजन के पाचन में भी सहायक होता है।

## ब्रेस्ट कैंसर से बचाता है विटामिन डी

ब्रिटेन के विशेषज्ञों का कहना है कि विटामिन डी के सेवन से स्तन कैंसर के खतरे को कम किया जा सकता है। लंदन की सर्जन एवं प्रो. केफाल मोकबेल के अनुसार इससे एक हजार जिंदगियां प्रतिवर्ष बचाई जा सकती हैं। वैसे तो धूप विटामिन डी का सबसे बड़ा स्रोत है, लेकिन महिलाएं अक्सर अपनी दिनचर्या में इससे महारूम हो जाती हैं, प्रो. मोकबेल का दावा है कि 20 साल की आयु के बाद महिलाएं को प्रतिदिन एक विटामिन डी की गोली का सेवन करना चाहिए, इसके सेवन से स्वस्थ महिलाओं में भी ब्रेस्ट कैंसर होने की आशंका काफी घट जाती है, महिलाओं में जरूरी विटामिन डी लेबल काफी उच्च स्तर का होता है, जो अक्सर कम हो जाता है, इसे मॉटेन करके खतरे को कम किया जा सकता है।

अध्ययन के अनुसार इसका (विटामिन डी की गोलीयों का) खर्च काफी कम है और लाभ काफी अधिक क्योंकि इससे बड़ी परेशानी की आशंका काफी कम हो जाती है, एक अध्ययन के अनुसार, ब्रिटेन में हर साल 50 हजार महिलाएं ब्रेस्ट कैंसर की चपेट में आ रही हैं, इसमें 1200 मौत के मुह में चली जाती हैं, अध्ययन के अनुसार, वैसे तो विटामिन डी हड्डियों की मजबूती में अहम रोल अदा करता है, लेकिन अब यह भी माना जाता है कि विटामिन डी इम्यून सिस्टम और कोशिका विभाजन को नियंत्रित करने में भी लाभकारी है, यह दोनों कैंसर की रोक के अहम कारक हैं, अमेरिका के हार्वर्ड स्कूल और पब्लिक हेल्थ के अनुसार विटामिन डी की कमी से कई बड़ी बीमारियां जैसे ऑस्टियोपोरोसिस, हृदय रोग, पत्तू, कई प्रकार के कैंसर, टीबी और स्केरोसिस का खतरा बढ़ जाता है, विटामिन डी हड्डियों की मजबूती में अहम रोल अदा करता है यह इम्यून सिस्टम और कोशिका विभाजन को नियंत्रित करने में लाभकारी हेल्थ फैक्टर है।



## जरा संभलकर मम्मी टू बी...

गर्भावस्था के दौरान जरा सी असावधानी बरतने पर आपको कमर दर्द संबंधी समस्या उत्पन्न हो सकती है। इससे बचने के लिए आइए जानते हैं क्या करें और क्या न करें

### ऐसा न करें

- भारी वस्तुएं न उठाएं।
- कमर को झुकाएं नहीं।
- उल्टे-सीधे तरीके से न लेटें।
- जगने पर बिस्तर से झटके में न उठें।
- ज्यादा देर के लिए हाई हील न पहनें।
- कंधे पर भारी बैग लटकाकर न चलें।
- हर काम अपने सिर पर लेने की कोशिश न करें।

### ऐसा करें

- भारी वस्तुएं उठाने के लिए अपने पति या अपने किसी खास से कहें।
- कमर झुकाने के बजाय घुटनों के बल बैठें और अपनी कमर सीधी रखें।
- अपनी स्पाइन को सीधा रखने के लिए जिस करवट लेटी हैं उस तरफ घुटनों के बीच में एक तकिया जरूर रखें।
- नींद से उठने पर पहले करवट लें। फिर अपने हाथों का सहारा लेकर बैठ जाएं।
- हाई हील के स्थान पर लो हील और प्लेट जूते-चप्पल का ही इस्तेमाल करें। इससे आपकी पेटविस और पीट सीधी रहेगी।
- भारी बैग के बजाय बैक पैक का इस्तेमाल करें।
- जितना संभव हो घर के कामों की जिम्मेदारियां परिवार के सदस्यों को सौंपें। आपके साथ ही आने वाले नन्हें मेहमान को भी तो सुकून चाहिए।



## सार समाचार

## हाफिज सईद के घर के बाहर विस्फोट के मामले में पाकिस्तानी अदालत ने चार लोगों को मौत की सजा सुनाई

लाहौर। पाकिस्तान में एक आतंकवाद रोधी अदालत ने मुंबई हमलों के सरगना एवं जमात उद दावा प्रमुख हाफिज सईद के घर के बाहर बम विस्फोट की घटना में भूमिका निभाने को लेकर बुधवार को चार लोगों को दोषी करार देते हुए मौत की सजा सुनाई। अदालत के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। पिछले साल जून में, सईद के घर के बाहर एक कार में भीषण बम विस्फोट हुआ था जिसमें तीन लोगों की मौत हो गई थी। आतंकवाद रोधी अदालत के न्यायाधीश अरशद भुट्ट ने यहां कोर्ट लखपत जेल में बंद कमरे में हुई सुनवाई के दौरान आयशा बीबी नामक एक महिला को पांच साल कैद की सजा भी सुनाई। अदालत के अधिकारी ने पीटीआई-से कहा, हलाहौर की आतंकवाद रोधी अदालत ने प्रतिबंधित संगठन तहरीक ए तालिबान पाकिस्तान के इंद गुल, पीटर पॉल डैविड, सज्जाद शाह और जियाउल्ला को मौत की सजा सुनाई। एक अन्य आरोपी आयशा बीबी को पांच साल कैद की सजा सुनाई गई।

## श्रीलंका में लोग हैं बढ़ती महंगाई से परेशान, टमाटर 200 रुपये किलो तो बीस की कीमत हुई 300 के पार

ही मिली है। भूकंप का झटका सबसे पहले स्थानीय समानुसार तड़के तीन बजकर आठ मिनट (अंतरराष्ट्रीय समानुसार एक बजकर आठ मिनट) पर महसूस किया गया। इसका अधिकेंद्र साइप्रस के पश्चिमी तट से 50 किलोमीटर दूर 25 किलोमीटर की गहराई में था। भूगर्भ सर्वेक्षण विभाग ने बताया कि शक्तिशाली भूकंप के बाद भी कई झटके महसूस किए गए। भूकंप के कारण कई लोग खासकर देश के पश्चिमी जिलों के लोग रात में घरों से बाहर निकल गए, क्योंकि इस क्षेत्र में भूकंप का झटका अधिक जोरदार था। पुलिस ने सरकारी प्रसारणकर्ता साइबीसी को बताया कि देशभर में अतिरिक्त गश्ती दल तैनात कर दिये गए हैं, लेकिन अभी तक किसी तरह के नुकसान की जानकारी नहीं है। पड़ोसी देश तुर्की के भूमध्यसागरीय क्षेत्र में भी भूकंप के झटके महसूस किए गए, लेकिन किसी तरह के नुकसान की खबर नहीं है। डीएए समाचार एजेंसी के अनुसार, तुर्की के दक्षिणी अंताल्या प्रांत के कुछ जिलों में लोग झटकों को महसूस करने के बाद अपने घरों से बाहर निकल कर सड़कों पर आ गए। गौरतलब है कि साइप्रस उस सक्रिय भूकंपीय क्षेत्र में स्थित है जहां एक आकलन के मुताबिक दुनिया के 15 फीसदी भूकंप आते हैं।

## नाइजीरिया ने सात महीने बाद ट्विटर से हटाई रोक

अजुजा। पश्चिम अफ्रीकी देश नाइजीरिया में सात महीने बाद वहां की सरकार ने ट्विटर से प्रतिबंध हटा लिया है। इस प्रतिबंध के कारण देश के 20 करोड़ से अधिक लोग सोशल मीडिया नेटवर्क से कट गए थे। देश की राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी विकास एजेंसी के महानिदेशक काशीफु इनुवा अदुल्लाही के अनुसार नाइजीरिया के राष्ट्रपति मुहम्मद बुहारी ने निर्देश दिया कि ट्विटर का संचालन फिर से शुरू हो गया है। अदुल्लाही ने कहा कि ट्विटर द्वारा नाइजीरिया में एक कार्यालय खोलने सहित कुछ शर्तों को पूरा करने के लिए सहमत होने के बाद यह फैसला हुआ है। नाइजीरिया के कोरपोरेट अस्तित्व को कम करने वाली गतिविधियों के लिए एक मंच के तौर पर ट्विटर के लगातार उपयोग का हवाला देते हुए नाइजीरिया ने पिछले साल चार जून को सोशल नेटवर्किंग साइट का संचालन निलंबित कर दिया था। इस कार्रवाई से नाइजीरिया की काफी आलोचनाएं हुईं क्योंकि यह कदम सोशल मीडिया नेटवर्क द्वारा बुहारी के एक पोस्ट को हटाने के तुरंत बाद आया था।

## सार्स-सीओवी 2 से संक्रमित होने की संभावना कम

भारतीय मूल के शोधकर्ताओं ने अध्ययन में किया दावा लंदन। भारतीय मूल के शोधकर्ताओं के नेतृत्व में ब्रिटेन में किये गए एक नए अध्ययन में यह दावा किया है कि जिन लोगों के शरीर में सामान्य सर्दी-जुकाम देने वाले कोरोना वायरस के कारण अधिक मात्रा में टी कोशिकाएं होती हैं, उनके कोविड-19 बीमारी को जन्म देने वाले स्वरूप सार्स-सीओवी 2 से संक्रमित होने की संभावना कम होती है।

शोध रिपोर्ट में दावा किया गया है कि टी कोशिकाओं की सुरक्षात्मक भूमिका को लेकर पहली बार सबूत उपलब्ध कराया गया है। यह अध्ययन इंपीरियल कॉलेज लंदन के शोधकर्ताओं ने किया। इसके पहले के अन्य अध्ययन में कहा गया था कि अन्य कोरोना वायरस द्वारा प्रेरित टी कोशिकाएं कोविड-19 के जिम्मेदार सार्स-सीओवी-2 नामक वायरस की पहचान कर लेती हैं। लेकिन नये अध्ययन में यह बताया गया है कि किस तरह टी कोशिकाओं की मौजूदगी सार्स-कोव-2 से संक्रमण को प्रभावित करती है। इंपीरियल कॉलेज लंदन में नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर हेल्थ रिसर्च (एनआईएचआर) के निदेशक प्रोफेसर अजित लालवानी ने कहा, 'हमारे शोध से अब तक का सबसे स्पष्ट सबूत मिला है कि सामान्य सर्दी-जुकाम देने वाले कोरोना वायरस से प्रेरित टी कोशिकाएं सार्स-सीओवी-2 से संक्रमण के खिलाफ सुरक्षात्मक भूमिका निभाती हैं।' शोधकर्ताओं को उम्मीद है कि उनके नतीजे दूसरी पीढ़ी के सार्वभौमिक टीके तैयार करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। इन सार्वभौमिक टीकों से कोविड-19 बीमारी के लिये जिम्मेदार वायरस के मौजूदगी और भविष्य के स्वरूपों के खिलाफ सुरक्षा मिल सकती है।

## श्रीलंका में लोग हैं बढ़ती महंगाई से परेशान, टमाटर 200 रुपये किलो तो बीस की कीमत हुई 300 के पार

नई दिल्ली। भारत के पड़ोसी देश श्रीलंका में आर्थिक संकट गहराता जा रहा है, श्रीलंका दिवालिया होने की कगार पर खड़ा है। श्रीलंका में महंगाई की मार से आम लोग त्रस्त हो गए हैं अब इसी को लेकर श्रीलंका के एडवोकेट आइडेंटिटीयूट ने आंकड़े जारी किए हैं। इन आंकड़ों में बताया गया है कि श्रीलंका में खाने पीने की वस्तुओं की कीमतों में 15 फीसदी तक बढ़ोतरी हुई है। खाने पीने की वस्तुओं में सबसे ज्यादा झंझाका सब्जियों की कीमत में हुआ है। श्रीलंका में खुदरा वस्तुओं की महंगाई को लेकर वहां



का Advocata Institute का ईई Bath Curry Indicator आंकड़े जारी करता है। बीसीआई की ओर से जानकारी दी गई कि नवंबर 2021 से दिसंबर 2021 के बीच श्रीलंका में खाद्य वस्तुओं की महंगाई 15 फीसद बढ़ी है। वहां इस महंगाई के बढ़ने की वजह सब्जियों की कीमत में दर्ज की गई बढ़ोतरी है। श्रीलंका में 18 (श्रीलंकाई) रुपये में जहां 100 ग्राम में मिर्च मिल जाती थी, उसकी कीमत बढ़ कर अब 71 (श्रीलंकाई) रुपये हो गई है। श्रीलंका में 1 किलो मिर्च की कीमत 710 रुपए है। 1 महीने में है इसकी कीमत में 287 फीसद बढ़ी है।



सोमालिया में आत्मघाती बम धमाके के स्थल पर एकत्र लोग।

## हूती के कब्जे वाले जहाज पर सवार सात भारतीयों की सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं : भारत

संयुक्त राष्ट्र। (एजेंसी)

भारत ने संयुक्त अरब अमीरात के ध्वज वाले मालवाहक जहाज पर सवार सात भारतीय नागरिकों की सुरक्षा को लेकर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए चालक दल और जहाज को तत्काल रिहा करने की अपील की है। इस जहाज को हूती विद्रोहियों ने बंधक बना लिया है। यमन के हूती विद्रोहियों ने दो जनवरी को होदीदा बंदरगाह पर 'रवाबी' नाम के जहाज को बंधक बना लिया था। संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि टी एस तिरुमूर्ति ने कहा, 'हम यमन में सैन्य अभियानों के निरंतर तीव्र होने से चिंतित हैं। पिछले कुछ वर्षों में सना, मासिब और शाब्बा में भीषण झड़पें शांति की संभावनाओं को कमजोर कर रही हैं।' यमन पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में बुधवार को तिरुमूर्ति ने चिंता जतायी कि



इस महीने की शुरुआत में होदीदा तट पर संयुक्त अरब अमीरात के 'रवाबी' जहाज को बंधक बनाने से पहले से चल रहा तनाव और बढ़ेगा। तिरुमूर्ति ने कहा, 'हम इस कृत्य पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हैं जिसने क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा को खतरों में डाल दिया है। जहाज में सवार चालक दल के सदस्यों में सात भारतीय नागरिक भी शामिल हैं और हम उनकी सुरक्षा तथा कुशलक्षेम को लेकर बहुत चिंतित हैं।' हूती विद्रोहियों से चालक दल के सदस्यों और जहाज को तत्काल रिहा करने का अनुरोध करते हुए तिरुमूर्ति ने कहा कि हूती पर चालक दल के सदस्यों की रिहाई तक

## विदेशी कर्ज के मोहताज इमरान के बड़बोले बयान, पाकिस्तान के हालात को बताया भारत से बेहतर

इस्लामाबाद (एजेंसी)

पाकिस्तान वैसे तो विदेशी कर्ज के बोझ तले दबा हुआ है, लेकिन फिर भी अपनी हेकड़ी दिखाने से बाज नहीं आ रहा है। पाकिस्तान के वजीर-ए-आलम ने ऐसा झूठ बोला है कि दुनिया उन पर हंस रही



भारत से तुलना करके देखिए पाकिस्तान उनसे कितना आगे निकल चुका है। आज भारत की विकास दर माइंस 7 प्रतिशत है और पाकिस्तान की चार फीसदी। पाकिस्तानी प्रधानमंत्री ने लोगों से कहा कि देश के लिए मुश्किल वक्त अब खत्म हो चुका है। गौरतलब है कि इमरान खान का यह बयान ऐसे समय पर आया है जब पाकिस्तान 1 अरब डॉलर के लोन के लिए अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के दरवाजे पर झोली फैलाए खड़ा है। साल 2018 में सं?ता में आए इमरान खान ने लोन लेने के अब तक के सभी रेकार्ड तोड़ते हुए पिछले 3 साल में 40 अरब डॉलर का कर्ज लिया है।

एक सेरेमनी के दौरान पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने कहा कि भारत और पाकिस्तान में जनसंख्या घनत्व एक समान ही है। दोनों देशों में प्राकृतिक समानताएं भी एक समान ही हैं। लेकिन भारत ने जो नीतिगत फैसले लिए हैं उससे भारत का क्या अंजाम हो रहा है।

## चीन की बेदर्द सरकार, कोविड संक्रमित मरीजों को लोहे के बक्सों में किया जा रहा कैद; नियम तोड़ने पर मिलेगी सख्त सजा

बीजिंग। (एजेंसी)

चीन से कोरोना महामारी अब पूरी दुनिया में कोहराम मचा रही है। नये वेरिएंट ओमिक्रोन के आने के बाद से चीन में भी मामलों में बढ़ोतरी हुई है। संक्रमण न फैले इसके लिए चीन अपने ही देश के लोगों पर अत्याचार करने पर उतर गया है। चीन से एक रिपोर्ट आई है जिसके मुताबिक चीन में कोरोना से संक्रमित लोगों को लोहे के बॉक्सों में बंद किया जा रहा है। यह अत्याचार शी जिनापिंग के अधिकारियों द्वारा किया जा रहा है। अब तक करीब 2 करोड़ से भी ज्यादा लोगों को इन लोहे के बॉक्सों में बंद करके रख दिया गया है।

शी जिनापिंग की जीरो कोविड पॉलिसी शी जिनापिंग के राष्ट्रपति द्वारा एक पॉलिसी की शुरुआत की गई है जिसको जीरो कोविड पॉलिसी नाम दिया गया है। इस पॉलिसी के नाम पर शी चीन के लोगों पर अत्याचार करने से बाज नहीं आ रहा है। डेली मेल की कई वीडियो के मुताबिक, लोहे के बॉक्सों में बंद किया जा रहा है। रिपोर्ट के मुताबिक, कोरोना से संक्रमण मरीजों को चीन के शीआन, आन्यांग और युझोउ प्रांतों में लोहे के बॉक्स में बंद कर रहे हैं। शीआन शहर में एक करोड़ 30 लाख लोग क्वारंटाइन के नाम पर अपने घरों में कैद हैं और किसी को भी घर से बाहर निकलने की इजाजत नहीं है। वहीं नई दिल्ली में भी लोहे के बॉक्सों में बंद किया जा रहा है। इसके अलावा जो लोग कोरोना से संक्रमित लोगों के संपर्क में आए हैं उन्हें भी अलग-अलग बक्सों में बंद किया गया है। जिससे वह किसी और को संक्रमित न कर सके।



2 करोड़ से ज्यादा लोगों को किया कैद डेली मेल ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि, चीन के शीआन में अत्याचार की सारी हदें पार की जा रही है। शीआन समेत कई शहरों में कुल मिलाकर लगभग 2 करोड़ से भी अधिक लोगों को लोहे के बॉक्सों में कैद किया गया है। शीआन शहर में एक करोड़ 30 लाख लोग क्वारंटाइन के नाम पर अपने घरों में कैद हैं और किसी को भी घर से बाहर निकलने की इजाजत नहीं है। वहीं सैकड़ों लोगों को लकड़ी का बॉक्सों में बंद

किया जा रहा है। इस बॉक्स में एक शोचालय दिया गया है और दो हफ्तों तक लोहे के बॉक्स में बंद रहने को कहा गया है। डेली मेल की एक रिपोर्ट के अनुसार, चीनी सोशल मीडिया पर एक वीडियो भी पोस्ट की गई है जिसमें लोगों को लोहे के बॉक्सों में बंद करते दिखाया जा रहा है। नियम तोड़ने पर सख्त सजा चीनी मीडिया ग्लोबल टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक, अगर किसी ने भी कोरोना के नियमों के उल्लंघन किया तो 4 साल की जेल की कैद की सजा दी जाएगी। बुरी तरह से डरे लोग अब सवाल कर पूछ रहे हैं कि, सरकार की जीरो कोविड पॉलिसी में चूक के लिए इतनी कठोर सजा क्यों दी जा रही है?

## डब्ल्यूएचओ ने किया आगाह, डेल्टा से भी तेज फैल रहा ओमिक्रोन

जिनेवा (एजेंसी)

कोरोना के डेल्टा वायरस के बाद बदले स्वरूप ओमिक्रोन की तेज रफ्तार से दुनिया परेशान है। पूरी दुनिया में इस वेरिएंट से संक्रमण के मामले अब ज्यादा सामने आ रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के एक वरिष्ठ अधिकारी ने इस संबंध में चेताया है। वैश्विक स्वास्थ्य एजेंसी के अधिकारी ने चेताया है कि इस बात के साक्ष्य बढ़ रहे हैं कि ओमिक्रोन प्रतिरक्षा शक्ति से बच निकल सकता है लेकिन अन्य स्वरूपों की तुलना में इससे बीमारी की गंभीरता कम है। डब्ल्यूएचओ में संक्रामक रोग महामारी विज्ञानी एवं 'कोविड-19 टेक्निकल लीड' मारिया वान केरखोव ने मंगलवार को कहा कि कुछ देशों में ओमिक्रोन को

## डब्ल्यूएचओ ने किया आगाह, डेल्टा से भी तेज फैल रहा ओमिक्रोन



डेल्टा पर हावी होने में समय लग सकता है क्योंकि यह उन देशों में डेल्टा स्वरूप के प्रसार के स्तर पर निर्भर करेगा। केरखोव ने ऑनलाइन प्रश्नोत्तर सत्र के दौरान कहा, ओमिक्रोन उन सभी देशों में फैल रहा है जहां जीनोम अनुक्रमण की तकनीक अच्छी है और संभवतः यह

ओमिक्रोन से बीमारी के कम गंभीर होने को लेकर कुछ जानकारी हैं, लेकिन ह्यह हल्की बीमारी नहीं है। क्योंकि ओमिक्रोन के चलते भी लोगों को अस्पताल में भर्ती कराने की नौबत आ ही रही है। डब्ल्यूएचओ की तरफ से जारी कोविड-19 साप्ताहिक महामारी अद्यतन आंकड़ों के मुताबिक, तीन से नौ जनवरी वाले सप्ताह में विश्व भर में कोविड के 1.5 करोड़ नए मामले सामने आए जो उससे पहले के सप्ताह की तुलना में 55 प्रतिशत अधिक हैं जब करीब 95 लाख मामले आए थे। पिछले सप्ताह करीब 43,000 मरीजों की मौत के मामले सामने आए थे। नौ जनवरी तक, कोविड-19 के 30.40 करोड़ से अधिक मामले सामने आ चुके थे और 54 लाख से ज्यादा लोगों की संक्रमण से मौत हो चुकी थी।

## अमेरिकी कांग्रेस ने भारत में बतौर राजदूत गासेटी के नाम को स्वीकृति दी

वाशिंगटन (एजेंसी)

अमेरिकी कांग्रेस की एक महत्वपूर्ण समिति ने भारत में अमेरिका के राजदूत के तौर पर लॉस एंजलिस के मेयर एरिक एम गासेटी के नामांकन को मंजूरी प्रदान की है। गासेटी के अलावा सीनेट की शक्तिशाली विदेशी संबंध समिति ने बुधवार को 11 अन्य राजदूतों के नामांकन को मंजूरी दी। इनमें जर्मनी में अमेरिका के राजदूत के तौर पर एमी गुटमैन, पाकिस्तान में डोनाल्ड आर्मिन्गहोम तथा होली सी में जोए डोनेली के नाम शामिल हैं। अब इन नामों को अंतिम मंजूरी के लिए सीनेट के पटल पर रखा जाएगा। सीनेट की विदेश संबंधों की समिति के अध्यक्ष सीनेटर मेनेंडेज ने इस पर नाराजगी जताई कि समिति के समक्ष 55 नामांकन अब भी लंबित हैं और दुनियाभर में कई चुनौतियां उनका इंतजार कर रही हैं। उन्होंने कहा,

'जैसा कि मैंने इस समिति और सीनेट के समक्ष कई बार कहा है कि लंबे समय तक पदों को रिक्त रखना हमारे हित में नहीं है।' रैंकिंग सदस्य जिम रिश ने जर्मनी के राजदूत पद पर नामांकन के विपक्ष में मत दिया। उन्होंने कहा, 'मैं डॉ. गुटमैन के खिलाफ 'ना' में वोट दे रहा हूँ लेकिन यह निजी मसला नहीं है। मैं उनके साथ काम करने और जर्मनी के साथ हमारा गठबंधन मजबूत करने के लिए तैयार हूँ।' उन्होंने कहा, 'निश्चित तौर पर वह योग्य हैं, उनका लंबा और सफल करियर रहा है लेकिन मुझे लगता है कि यह संभवतः यूनिवर्सिटी ऑफ पेनसिल्वेनिया में काम करने को लेकर रहा, जो चीन से लाखों डॉलर का चंदा लेता है। अमेरिका के उच्च शिक्षा संस्थानों में विदेशी खासतौर से चीन के प्रभाव का मुद्दा इस समिति के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।'

## रिपब्लिकन पार्टी के सांसद ने भारत के खिलाफ कात्सा प्रतिबंध हटाने का समर्थन किया

वाशिंगटन। अमेरिका में रिपब्लिकन पार्टी के एक शीर्ष सांसद ने रूस से एस-400 मिसाइल सिस्टम की खरीद के लिए भारत के खिलाफ काउंटरिंग अमेरिकी एडवोकेट शू सेंवशस एक्ट (कात्सा) के तहत प्रतिबंधों में छूट करने का समर्थन करते हुए कहा है कि राष्ट्रपति जो बाइडन के प्रशासन को ऐसी किसी भी कार्रवाई का विरोध करना चाहिए जो भारत को व्हाइ से दूर कर सकता है। सांसद टॉड यंग ने कहा कि भारत को वर्तमान में रूस एस-400 प्रणाली की आपूर्ति कर रहा है। देश रूस से नए जंगी जहाजों को प्राप्त करने की प्रक्रिया में भी है। उन्होंने बुधवार को प्रतिबंध नीति के लिए विदेश विभाग के सयोजक के पद पर जेम्स ओल्डब्रायन के नाम की पुष्टि को लेकर सुनवाई के दौरान कहा था 'कि ये दोनों भारतीयों के लिए महत्वपूर्ण प्रणाली हैं। यंग ने कहा 'कि चीन के खिलाफ हमारी प्रतिस्पर्धा में भारत एक महत्वपूर्ण सहयोगी है और इसलिए मेरा मानना है कि हमें ऐसी किसी भी कार्रवाई का विरोध करना चाहिए जो उन्हें हमसे और व्हाइ से दूर कर सकता है। इसलिए हमारे साझा विदेशी नीतिगत हित को देखते हुए मैं भारत के खिलाफ कात्सा प्रतिबंधों में छूट का पुरजोर समर्थन करता हूँ। उन्होंने कहा 'कि जैसा कि यहां अधिकांश लोग जानते हैं, भारतीयों के पास पिछले दशकों से बहुत सारी विरासत प्रणालियां हैं और इसके लिए उन्हें रूस की प्रणाली पर निर्भर रहना पड़ता है। भारत चीनी घुसपैठ से अपनी भूमि की रक्षा और हिंद महासागर में चीनी नौसेना के गैरकानूनी दखल को रोकना चाहता है।

## कौटुंबिक व्यभिचार पर पाबंदी लगाएगा फ्रांस, कहा- अनाचार समाज में स्वीकार्य नहीं

पेरिस (एजेंसी)

कौटुंबिक व्यभिचार को लेकर फ्रांस सरकार गंभीर हो गई है उसने अनाचार संबंधों (पारिवारिक यौन संबंध) पर प्रतिबंध लगाने की योजना की घोषणा की है। फ्रांस में बच्चों को छोड़कर अनाचार को इस समय कानूनी दर्जा प्राप्त है। फ्रांस बाल संरक्षण राज्य मंत्री एड्रियन टैवेट ने कहा कि सरकार का इरादा ऐसे रिश्तों को आपराधिक बनाना है, भले ही दोनों की उम्र 18 साल के अधिक ही क्यों न हो। अनाचार एक ही परिवार के सदस्यों (जैसे भाई और बहन) के बीच गैर-कानूनी यौन संबंध को कहते हैं। इसे कौटुंबिक व्यभिचार भी कहा जाता है। समाचारों के मुताबिक नया कानून समाज में स्पष्ट रोक जारी करने के लिए है। अनाचार समाज में स्वीकार्य नहीं है...चाहे कोई भी उम्र हो। आप अपने पिता, अपने बेटे या अपनी

बेटी के साथ यौन संबंध नहीं रख सकते हैं। यह उम्र का सवाल नहीं है, यह वयस्कता की सहमति का सवाल नहीं है। हम अनाचार के खिलाफ लड़ रहे हैं। संकेत स्पष्ट होने चाहिए। उन्होंने कहा कि अनाचार के लिए 18 साल की सीमा की समीक्षा की जाएगी। चचेरे भाइयों को अभी भी बदले हुए नियमों के तहत शादी करने की अनुमति दी जाएगी। उन्होंने इस बारे में कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया कि क्या प्रस्तावित कानून का विस्तार सौतेले परिवार तक होगा या नहीं। चाइल्ड प्रोटेक्शन चैरिटी लेस पैपिलॉन्स के अध्यक्ष लॉरेंट बोएट ने इस कदम का स्वागत करते हुए कहा कि अनाचार को कानूनी रूप से प्रतिबंधित किया जाना चाहिए, क्योंकि यह पहले से ही सामाजिक रूप से निषिद्ध था। 1791 में, अनाचार, इशानिदा और सोडोमी को फ्रांसीसी दंड संहिता से अपराध की श्रेणी से हटा दिया गया था।

भारत की तरफ से हॉट स्पिंग, डेप्सांग और डेमचोक इलाकों में सैनिकों की पूर्ण वापसी पर दिया गया जोर

## भारत-चीन के बीच 14वें दौर की गोगरा-हॉट स्पिंग वार्ता बेनतीजा

नई दिल्ली।

भारत-चीन के बीच सीमा विवाद के बीच भारत-चीन के बीच 14वें दौर की गोगरा-हॉट स्पिंग वार्ता बेनतीजा रही। पूर्वी लद्दाख में टकराव वाले शोष इलाकों से गतिरोध खत्म करने के लिए बुधवार को भारत-चीन के सैन्य कमांडरों के बीच 14वें दौर की वार्ता हुई है। इसमें भारत की तरफ से हॉट स्पिंग, डेप्सांग और डेमचोक इलाकों में सैनिकों की

पूर्ण वापसी पर जोर दिया गया। इस बीच सेना प्रमुख जनरल एमएम नरवणे ने एक बयान में कहा कि इस बातचीत में पीपी-15 यानी हॉट स्पिंग से जुड़े मुद्दों का समाधान होने की उम्मीद है। पूर्वी लद्दाख में पिछले 20 महीनों से गतिरोध जारी है। कई स्थानों से भारत-चीन ने अपनी सेनाएं पीछे हटाई हैं। लेकिन कई स्थानों पर गतिरोध कायम है। पिछले साल 10 अक्टूबर को 13वें दौर की वार्ता हुई थी जो बेनतीजा रही। इसलिए इस वार्ता

पर सबकी नजरें हैं। इस बीच वार्ता को लेकर सेना प्रमुख नरवणे ने कहा कि हर दौर की वार्ता का कोई नतीजा नहीं निकलता है। लेकिन पूर्व में देखें तो 4-5वें दौर की वार्ता के बाद पीपी-14, नौवें एवं 10वें दौर की वार्ता के बाद पेंगोंग झील के दक्षिण एवं उत्तरी तट एवं कैलाश रेंज तथा 12वें दौर की वार्ता के बाद पीपी-17 से सैनिकों की वापसी हुई थी। इस बार भी पीपी-15 यानी हॉट स्पिंग क्षेत्र से मुद्दों का समाधान की उम्मीद है।

रक्षा मंत्रालय से जुड़े सूत्रों ने बताया कि 14वें दौर की वार्ता कमांडर स्तर की वार्ता पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर चीन की ओर चुशुल-मोल्लो बैठक स्थल पर हुई। बैठक सुबह साढ़े नौ बजे तय समय पर आरंभ हुई जो देर रात तक जारी रही। बातचीत में भारतीय शिष्टमंडल का नेतृत्व लेफ्टिनेंट जनरल अनिच्छा सेनगुता कर रहे हैं जिन्हें हाल ही में लेह स्थित 14वें कोर का कमांडर नियुक्त किया गया है। चीनी पक्ष का

नेतृत्व दक्षिण जिजियांग सैन्य जिले के चीफ मेजर जनरल यांग लि ने किया। नये दौर की वार्ता ऐसे समय हो रही है जब पूर्वी लद्दाख में पेंगोंग झील इलाकों में चीन की ओर से पुल बनाने पर भारत ने निशाना साधा था और कहा था कि यह इलाका पिछले 60 वर्षों से चीन के अवैध कब्जे में है जिसे भारत स्वीकार नहीं करता है। पिछले सप्ताह चीन ने अरुणाचल प्रदेश के कुछ इलाकों का अपनी ओर से नामकरण किया था और

भारत ने इन दावों को सिरे से खारिज कर दिया था। भारत ने कहा था कि इससे इस स्थिति पर कोई फर्क नहीं पड़ता है कि अरुणाचल प्रदेश भारत का अभिन्न अंग है। इसके पूर्व भारत और चीन 18 नवंबर को वचौं अल कूटनीतिक वार्ता में 14वें दौर की सैन्य वार्ता करने पर राजी हुए थे ताकि पूर्वी लद्दाख में बाकों के टकराव वाले स्थानों पर पूरी तरह से सेना को हटाने को लक्ष्य हासिल किया जा सके।



### शिवसेना नेता संजय राउत ने मांगा किसानों का समर्थन, टिकैत ने कहा चुनाव से रहेंगे दूर

मुजफ्फरनगर। राज्यसभा सांसद व शिवसेना नेता संजय राउत ने गुरुवार को भारतीय किसान यूनियन के प्रवक्ता चैधरी राकेश टिकैत से मुलाकात कर किसानों का समर्थन मांगा। मुलाकात के बाद राज्यसभा सदस्य संजय राउत ने कहा कि यूपी और महाराष्ट्र में उन्हें किसानों का समर्थन चाहिए। किसानों का समर्थन से इस बार यूपी में बदलाव होगा। अयोध्या में भी पार्टी उम्मीदवार उतारेगी। वह चैधरी राकेश टिकैत से मिलने आए हैं। किसी तरह की राजनीतिक मुलाकात नहीं है। लंबे किसान आंदोलन के बाद पहली बार उनका अभिप्रेत करने पहुंचे हैं। वहीं चैधरी राकेश टिकैत ने कहा कि उनका परिवार राजनीति से दूर है। उधर, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने भी मोबाइल कॉल के जरिए राकेश टिकैत से बात की और किसानों के मुद्दे पर दोनों में लंबी बातचीत हुई। टिकैत ने बताया कि वह जल्द ही महाराष्ट्र पहुंचकर शिव सेना सरकार की किसानों के लिए चलाई जा रही नीतियों को देखेंगे। संजय राउत ने यह भी कहा कि शिव सेना यूपी में 50 से 100 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। इस बार यूपी की विधानसभा में शिव सेना का प्रतिनिधित्व होगा।

### जोमैटो अपने कर्मचारी की सड़क दुर्घटना में मौत, परिवार को नौकरी और 10 लाख रुपये की मदद देगा

मुंबई। जोमैटो ने गुरुवार को कहा कि पिछले हफ्ते सड़क दुर्घटना में जान गंवाने वाले उसके कर्मचारी सलिल त्रिपाठी की पत्नी सुचेता त्रिपाठी को नौकरी के अलावा 10 लाख रुपये का बीमा अनुदान मिलेगा। इसके अलावा कंपनी के कर्मचारियों ने त्रिपाठी के परिवार के भविष्य की खातिर 12 लाख रुपये का योगदान दिया है। जोमैटो के संस्थापक दीपेंद्र गोयल ने ट्वीट में कहा, हम हमारे डिलिवरी साझेदार सलिल त्रिपाठी की सड़क हादसे में दुर्भाग्यवश मृत्यु होने से बहुत दुखी हैं। उनके परिवार को हम हर संभव सहायता दे रहे हैं।' कंपनी द्वारा अभी तक त्रिपाठी के परिवार की मदद के लिए उधार कर्तव्यों के बारे में जानकारी देकर गोयल ने कहा, 'हमारी टीम परिवार की निजी तौर पर मदद कर रही है, हादसे की रात से ही हमारे सहयोगी अस्पताल में हैं। अभी तक हुए खर्चों में हमारे द्वारा पूरी सहायता दी है।' गोयल ने बताया कि कंपनी के कर्मचारियों ने 10 लाख रुपये का बीमा अनुदान दे रही है। उन्होंने कहा, हम सलिल की पत्नी सुचेता को नौकरी देने के हर संभव प्रयास करने वाले हैं, ताकि वह अपना घर चला सके और 10 वर्षीय बेटे की शिक्षा जारी रख सके। गोयल ने बताया कि कंपनी के कर्मचारियों ने त्रिपाठी के परिवार के भविष्य की खातिर 12 लाख रुपये एकत्रित किए हैं। आठ जनवरी की रात को जोमैटो के 38 वर्षीय डिलिवरी कर्मचारी सलिल की दिल्ली के रोहिणी इलाके में सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी।

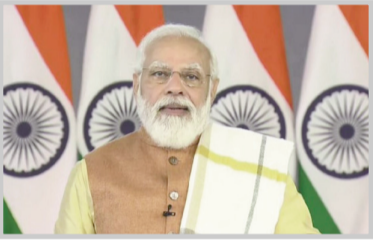
### कोरोना के चलते मेकेदातु पदयात्रा अस्थायी रूप से रोकने का फैसला किया : सिद्धरमैया

बेंगलुरु। कांग्रेस की कर्नाटक ईकाई ने कोरोना संबंधी चिंताओं के कारण और जन स्वास्थ्य के हित में अपनी मेकेदातु पदयात्रा अस्थायी रूप से रोकने का फैसला किया है। विपक्ष के नेता सिद्धरमैया ने इसकी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी इसका पदयात्रा नहीं रोक रही कि उसे अपने नेताओं के खिलाफ मामले दर्ज किए जाने का डर है या भाजपा सरकार ने इस पर रोक लगाने का आदेश दिया है। उन्होंने कहा कि तीसरी लहर के धीमी पड़ने और पाबंदियों में ढील दिए जाने पर पदयात्रा फिर शुरू होगी। सिद्धरमैया ने कहा, हमें कर्नाटक में लोगों की सेहत की चिंता है, यह देखना हमारी जिम्मेदारी है कि हमारी पदयात्रा के कारण कोविड न फैले, सभी आवश्यक उपाय करने के बावजूद हमें चिंता है, इसलिए हमने आज चर्चा की। हम नहीं चाहते कि लोगों को लगे कि कोविड की बिगड़ती स्थिति के लिए हम जिम्मेदार हैं।' पार्टी नेताओं और विधायकों के साथ बैठक के बाद उन्होंने कहा कि पदयात्रा कल शाम तक बेंगलुरु पहुंचनी थी, जहां कोविड के मामले बहुत ज्यादा हैं। उन्होंने कहा, '...इसलिए हमने इस पदयात्रा को यहाँ अस्थायी रूप से रोकने का फैसला किया है। एक बार जब तीसरी लहर धीमी हो जाएगी और कोविड-19 संबंधी नियमों में ढील दी जाएगी तो हम रामनगर से शेष पदयात्रा शुरू करेंगे।' उच्च न्यायालय की कड़ी दिपिंगियों और सरकार के गत रात पदयात्रा में भाग ले रहे लोगों तथा वाहनों की आवाजाही निषिद्ध करने के आदेश के बाद कांग्रेस ने पदयात्रा रोकने का फैसला किया है।

### आप और टीएमसी गोवा में भाजपा विरोधी मतों को ही बांटेंगी

नई दिल्ली। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पी चिदंबरम ने गुरुवार को कहा कि गोवा चुनाव में कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) मुख्य प्रतिद्वंद्वी हैं। वहीं आम आदमी पार्टी तथा तृणमूल कांग्रेस कुछ वोट हासिल करेगी, वहां भी वे भाजपा विरोधी मतों को ही बांटेंगी। गोवा में कांग्रेस के लिए चुनाव पर्यवेक्षक की भूमिका निभा रहे चिदंबरम ने कहा कि कुछ दिनों पहले तृणमूल ने गठबंधन को लेकर संकेत दिया था, कांग्रेस नेतृत्व उसकी इस मंशा से अलग है। उनके अनुसार, हो सकता है कि इस पर जवाब दिया गया हो, लेकिन इस बारे में उनके पास आधिकारिक रूप से कोई निर्देश नहीं आया है। उन्होंने कहा कि गोवा में भाजपा के खिलाफ व्यापक माहौल है और सत्ता विरोधी बयार बह रही है तथा उनकी पार्टी गोवा के लोगों से यह अपील करेगी कि 'गोवा पर गोवावासियों का ही शासन होना चाहिए।' चिदंबरम ने कहा, हमारे पास ये खबरें आई कि तृणमूल कांग्रेस हमारे ब्लाक स्तर के नेताओं, सरपंचों सहित कई सदस्यों को अपने साथ लेने के लिए जुटी हुई है। उनका कहना है, शुरूआती दिनों में तृणमूल कांग्रेस के महासचिव ने घोषणा की थी कि तृणमूल गोवा की सभी 40 सीटों पर चुनाव लड़ेगी और ऐसा लगता था कि वे इसी लक्ष्य के साथ आक्रामक रुख अपनाए हुए थे। कुछ दिनों पहले तृणमूल ने संकेत दिया कि वह कांग्रेस और अन्य दलों के साथ गठबंधन करना चाहेगी।

## देश के सभी जिला मुख्यालयों में जल शक्ति केंद्र स्थापित करने की तैयारी में मोदी सरकार



नई दिल्ली।

केंद्र ने राज्य सरकारों से सभी जिला मुख्यालयों में 'जल शक्ति केंद्र' स्थापित करने का आग्रह किया है, ताकि जल संरक्षण की तकनीक, पानी बचाने के उपायों सहित जल से जुड़े विविध आयामों के बारे में लोगों को

जानकारी तथा तकनीकी मार्गदर्शन दिया जा सके। राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) के महानिदेशक जी अशोक कुमार ने बताया कि वर्षा जल संचयन के लिये 'कैच दी रेन' अभियान के अंतर्गत वर्ष 1950 के राजस्व रिकार्ड के आधार पर सुदूर संवेदी चित्र तथा भौगोलिक सूचना प्रणाली का उपयोग कर जिलावार जलाशयों एवं अन्य जल निकायों का मानचित्र तैयार करने का कार्य शुरू हुआ है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय जल मिशन ने भौगोलिक सूचना प्रणाली आधारित जल संरक्षण योजना एवं जिलों में जलाशयों से जुड़ी जानकारी एकत्र करने के दिशानिर्देश तैयार कर सभी जिलों को भेज दिए हैं। कुमार ने कहा कि इस उद्देश्य के लिये प्रत्येक जिले में 'जल शक्ति केंद्र' स्थापित

किया जा रहा है। इसके लिए राज्य सरकारों से सभी जिला मुख्यालयों में 'जल शक्ति केंद्र' स्थापित करने का कार्य पूरा करने का आग्रह किया है। 'एनएमसीजी के महानिदेशक ने बताया कि इसके लिए राष्ट्रीय जल मिशन, प्रोत्साहन आधारित वित्तीय अनुदान के रूप में हर जिले को दो लाख रुपये देगा। इसके तहत पहले वित्तीय अनुदान के रूप में एक लाख रुपये दिए जाने हैं, और शेष एक लाख रुपये की राशि जिलों को उनके प्रदर्शन एवं कार्य की गुणवत्ता के आधार पर दिए जाने हैं। उन्होंने बताया कि अभी तक 439 जिलों को 4.39 करोड़ रुपये आवंटित किये जा चुके हैं। कार्यक्रम का विस्तार देश के प्रत्येक जिले में करने का प्रयास किया जा रहा है।

### योगी सरकार के एक और मंत्री धर्म सिंह सैनी का इस्तीफा

लखनऊ।

एक ओर उग्र में भारतीय जनता पार्टी राज्य की सत्ता में पुनर्वापसी के लिए रणनीति बना रही है तो वहीं दूसरी ओर उसकी ही सरकार में मंत्री रहे नेता और विधायक पार्टी को अलविदा कह रहे हैं। भाजपा सरकार के एक-एक कर मंत्री और विधायक इस्तीफा दे रहे हैं। गुरुवार को दोपहर तक एक और मंत्री व तीन विधायकों ने भाजपा से इस्तीफा दे दिया। यानी आज कुल चार विधायकों ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया। इसमें मंत्री धर्म सिंह सैनी, विधायक मुकेश वर्मा, विनय शाक्य और बाला प्रसाद अवस्थी शामिल हैं। मुकेश वर्मा शिकोहाबाद से विधायक हैं, जबकि विनय शाक्य और बाला प्रसाद अवस्थी शिकोहाबाद से विधायक हैं, जबकि विनय शाक्य और बाला प्रसाद अवस्थी अलग-अलग सपा कार्यालय पहुंचकर अखिलेश से मुलाकात की। इससे पहले मंगलवार को योगी सरकार में मंत्री रहे स्वामी प्रसाद मौर्य और बुधवार को दारा सिंह चैहान ने इस्तीफा दिया था। बीते तीन दिन में तीन मंत्रियों ने भाजपा से इस्तीफा दे दिया है। वहीं, अब तक तीन मंत्रियों सहित कुल 14 विधायक भाजपा को अलविदा कह चुके हैं।



## केजरीवाल बोले- पंजाब की जनता स्वयं चुनें अपने सीएम प्रत्याशी का चेहरा

चंडीगढ़। पंजाब के सियासी दंगल में आम आदमी पार्टी काफी आशावादिता लगी है। पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने गुरुवार को कहा कि उनकी पार्टी आम जनता से पूछेगी कि पंजाब विधानसभा चुनाव में मुख्यमंत्री पद के लिए पार्टी का चेहरा किसे बनाया जाना चाहिए। उन्होंने संकेत दिया कि इस पद के लिए उनकी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भगवंत मान हैं और उन्होंने खुद को पंजाब के मुख्यमंत्री पद की दौड़ में नहीं है। मैं स्पष्ट कर दूँ कि मैं इसमें भागवंत मान और पार्टी के वरिष्ठ नेता राघव चड्ढा की मौजूदगी में एक मोबाइल नंबर जारी किया

जिस पर लोग 17 जनवरी तक अपनी आवाज में संदेश रिकॉर्ड करके, एसएमएस भेजकर या वॉट्सएप से इस बारे में अपनी राय बताने सकते हैं कि पार्टी नेताओं में से किसे वह मुख्यमंत्री पद के चेहरे के रूप में देखना चाहते हैं। केजरीवाल ने कहा, 'नहीं, अरविंद केजरीवाल इस दौड़ में नहीं है। मैं स्पष्ट कर दूँ कि मैं इसमें नहीं हूँ।' उन्होंने जून 2021 में घोषणा की थी कि 2022 के विधानसभा चुनाव के लिए के लिए पार्टी का मुख्यमंत्री पद का दावेदार सिख समुदाय से होगा और कहा कि पूरे पंजाब को उन पर गव्व होगा। केजरीवाल ने कहा कि वह चाहते हैं कि मान को मुख्यमंत्री पद का चेहरा

बनाया जाए लेकिन मान चाहते हैं कि पंजाब की जनता को यह फैसला करना चाहिए। उन्होंने यहां संबोधितियों से कहा, 'भगवंत मान भरे छोटे भाई हैं। वह आप पार्टी के बड़े नेता हैं। मैंने कहा कि भगवंत मान को बनाया जाना चाहिए, लेकिन उन्होंने कहा कि पहले लोगों से पूछना चाहिए। उन्होंने कहा कि बंद दरवाजों में मुख्यमंत्री पद के दावेदार के नाम पर फैसला करने का चलन बंद होना चाहिए।' दिल्ली के मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वतंत्र भारत में संभवतः पहली बार ऐसा हो रहा होगा कि कोई पार्टी जनता से पूछ रही है कि उसका मुख्यमंत्री पद के लिए चेहरा किसे बनाया जाना चाहिए।

### 'माघ मेला' में आदिकाल से चली आ रही कल्पवास की परंपरा का निर्वहन होगा

प्रयागराज। गंगा-यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम स्थल पर 14 जनवरी को दुनिया के सबसे बड़े आध्यात्मिक और सांस्कृतिक 'माघ मेला' में आदिकाल से चली आ रही कल्पवास की परंपरा का निर्वहन होगा। तीर्थराज प्रयाग में संगम तट पर पौष पूर्णिमा से कल्पवास आरंभ होकर माघी पूर्णिमा के साथ संपन्न होता है। मकर संक्रांति से अगली माघी संक्रांति तक कल्पवास करते हैं। परंपरा का निर्वहन करने वाले मुख्यतः बिहार और झारखंड के मैथिल्य ब्राह्मण होते हैं, जिनकी संख्या बहुत कम होती है। पौष पूर्णिमा से माघी पूर्णिमा तक बड़ी संख्या में श्रद्धालु कल्पवास करते हैं। वैदिक शोध एवं सांस्कृतिक प्रतिष्ठान कर्मकाण्ड प्रशिक्षण केंद्र के पूर्व आचार्य डॉ. आत्माराम गौतम ने कहा कि पुराणों और धर्मशास्त्रों में कल्पवास को आत्मा की शुद्धि और आध्यात्मिक ऊर्जा के लिए जरूरी बताया गया है। यह मनुष्य के लिए आध्यात्म की राह का एक पड़ाव है, जिसके जरिए स्वयंनिर्गम एवं आत्मशुद्धि का प्रयास किया जाता है। हर वर्ष कल्पवासी एक महीने तक संगम गंगा तट पर अल्पाहार, स्नान, ध्यान एवं दान करते हैं। देश के कोने कोने से आये श्रद्धालु संगम तीर्थ शिविर में रहकर माघ भर भजन-कीर्तन शुरू करेंगे और मोक्ष की आस के साथ संतों के सानिध्य में समय व्यतीत करेंगे।

## ओवैसी के खिलाफ बरेली से मुकदमा दर्ज करने की मांग, हिन्दुओं के खिलाफ दिया भड़काऊ बयान

बरेली।

ऑल इंडिया मजलिस ए इनेहादुल मुस्लिमीन के राष्ट्रीय अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी के खिलाफ बरेली से मुकदमा दर्ज करने की मांग उठी है। उनके खिलाफ बरेली के अधिवक्ता ने भड़काऊ भाषण देने का आरोप लगाकर एसएसपी को तहरीर दी है। मामले में एसएसपी ने कोतवाली पुलिस को जांच सौंप दी है। अफसरों के अनुसार जांच के बाद ही मामले में आगे की कार्रवाई होगी। बरेली में छह जनवरी को ओवैसी ने जनसभा को संबोधित किया था। शिकायत करने वाले अधिवक्ता हरीश कुमार एडवोकेट ने कहा कि जनसभा में ओवैसी ने भड़काऊ भाषण दिया। हरीश कुमार ने तहरीर में लिखा कि भाषण का वीडियो देखा व सुना जिसमें ओवैसी कह रहे हैं कि हमेशा योगी मुख्यमंत्री नहीं रहने वाले हैं, हमेशा मोदी प्रधानमंत्री नहीं रहने वाले हैं, हिंदुओं तब तुम्हारी हिफाजत कौन करेगा। योगी मठ में चले जाएंगे, मोदी पहाड़ों में चले जाएंगे। तब तुम्हारी हिफाजत कौन करेगा। हम मुसलमान तुम्हारे जुल्मों को याद रखने वाले हैं।



दी जा रही है। यह समाज में सौहार्द बिगाड़ने का षडयंत्र है। ओवैसी ने जनसभा में सपा, बसपा कांग्रेस पर भी निशाना साधकर कहा था कि मुसलमानों को सिर्फ वोट के लिए ही सियासी पार्टियां इस्तेमाल कर रही हैं। मैं तुम्हें नेता बनाने आया हूँ, प्रदेश में मुसलमानों की स्थिति दलितों से भी खराब है। सपा मुसलमानों के लिए मुशायरा करा रही है। भाजपा को मुस्लिम वोटों की जरूरत नहीं। उन्होंने पार्टियों के गठबंधन पर भी निशाना साधा था। कांग्रेस की मेरठान पर चुटकी लेकर बोले थे, राहुल यहां से भागकर केरल चले गए। ओवैसी ने कहा था मुस्लिम वोट का खजाना किसी का नहीं है। 70 साल में चोट लेने के बाद भी मुस्लिमों की ओर किसी ने नहीं देखा। सपा, भाजपा, बसपा, कांग्रेस को एक ही बताया था।

## अलवर दुष्कर्म कांड पर कांग्रेस पर भड़की भाजपा



नई दिल्ली।

देश में लड़कियां कही भी सुरक्षित नहीं हैं अब राजस्थान के अलवर जिले में मानसिक रूप से निराश 15 वर्षीय किशोरी के कथित दुष्कर्म को मुद्दा बनाकर

महिलाओं के सशक्तिकरण की बात करने वाली विपक्षी पार्टी के पाखंड को बेनकाब कर दिया है। भाजपा प्रवक्ता गौरव भाटिया ने कहा कि अलवर में इस किशोरी के साथ कथित तौर पर बलात्कार किए जाने का मामला सामने आया है लेकिन अभी

### कहा- प्रियंका गांधी का पाखंड बेनकाब हो गया

तक दोषियों को गिरफ्तार नहीं किया गया है। पत्रकारों से चर्चा में उन्होंने कहा कि कांग्रेस जहां अपनी नेता प्रियंका गांधी का जन्मदिन मनाने में मशगूल थी वहीं राजस्थान की लड़कियां इस जघन्य अपराध के दोषियों को दंडित किए जाने की मांग कर रही थीं। ज्ञात हो कि मानसिक रूप से निराश किशोरी मंगलवार रात नौ बजे अलवर के तिजारा फाटक के पास सड़क पर पायल अवस्था में मिली थी। बुधवार को जयपुर के अस्पताल में उसकी शल्य चिकित्सा की गई। पीड़िता के

निजी अंगों में गंभीर चोट के कारण सर्जरी में ढाई घंटे का समय लगा। भाटिया ने कहा, 'एक तरफ प्रियंका गांधी वादा उरार प्रदेश में कहती हैं 'लड़की हूँ, लड़ सकती हूँ' लेकिन दूसरी तरफ उनकी पार्टी के शासन वाले राजस्थान में लड़कियां यह कहकर अपनी नाराजगी प्रकट कर रही हैं कि 'लड़की हूँ, तुम पर भड़की हूँ।' उन्होंने कहा कि राजस्थान में भाजपा विपक्ष की सक्रिय भूमिका निभा रही है और पीड़ित को लड़की के लिए न्याय की मांग कर रही है। भाजपा प्रवक्ता ने दावा किया कि इस जघन्य अपराध के खिलाफ राज्य की

जनता में व्यापक आक्रोश है और यह घटना कांग्रेस के पाखंड को बेनकाब करती है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने पुलिस महानिदेशक एमएल लाटार से इस मामले में एक रिपोर्ट मांगी है और विस्तृत जांच के निर्देश दिए हैं। पुलिस ने बताया कि प्रथम दृष्टया यह दुष्कर्म का मामला प्रतीत होता है। हालांकि, अब तक इस बारे में पुष्टि नहीं हो पाई है। मामले की जांच के लिए पुलिस की कई टीम गठित की गई हैं लेकिन पीड़िता के साथ हुई घटना के बारे में पुलिस को अब तक कोई खास जानकारी नहीं मिल सकी है।

भ्रष्टाचार प्रतियोगिता में  
भाग लो ईनाम जीतो

&

भ्रष्टाचार की जानकारी देने  
पर ईनाम जीतो

[krantisamay@gmail.com](mailto:krantisamay@gmail.com)



9879141480

fight against corruption india

भारत में भ्रष्टाचार  
के खिलाफ लड़ाई